संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक :
१ फरवरी २०१४
वर्ष : २३ अंक : ८
(निरंतर अंक : २५४)

माता-पिता के आशीर्वाद से गणेशजी सभी देवताओं में प्रथम पूज्य हुए।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

माता-पिता की सेवा के प्रताप से भगवान ने पुंडलिक के द्वार पर एक ईंट पर खड़ा होना स्वीकार लिया।
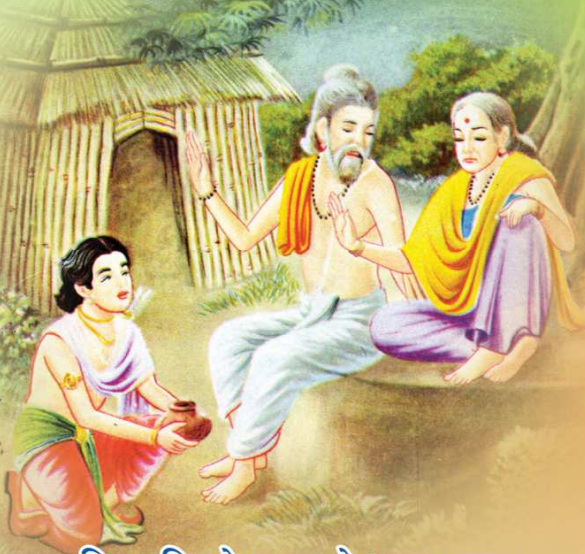
मातृ-पितृ भक्ति के प्रताप से श्रवण कुमार का नाम इतिहास में अमर हो गया।

यही संदेश आज पूज्य बापूजी द्वारा विश्व के सभी धर्म, मत, पंथ, सम्प्रदाय के लोगों को मिल रहा है।

आओ मनायें १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'

सभी देशवासियों विश्ववासियों का मंगल हो !

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

मातृ-पितृ पूजन दिवस १४ फरवरी

'वेलेंटाइन डे' के दिन लड़के-लड़कियाँ एक दूसरे को फूल देकर 'आई लव यू' बोलते हैं। २८ विकसित देशों में हर साल १३ से १९ साल तक की १२,५०,००० लड़कियाँ गर्भवती हो जाती हैं। उनमें से लगभग ५ लाख तो गर्भपात कराती हैं और ७,५०,००० बच्चियाँ माँ बन के या तो सरकारी नर्सिंग होम, सरकार एवं माँ-बाप पर बोझ बन जाती हैं या तो फिर वेश्या का धंधा आदि करती हैं। तो यह गंदगी अब हमारे देश में घुस गयी है। 'वेलेंटाइन डे' पर ५ महानगरों में सैकड़ों करोड़ की दारू बिकी जिसे निर्दोष बच्चे-बच्चियों ने पिया। सैकड़ों लड़के-लड़कियाँ भाग जाते हैं १४ फरवरी को।

यदि लड़का दारू पीकर पड़ा रहे तो उसकी माँ कितनी दुःखी होगी ! स्कूल में जानेवाली लड़की दारू पिये तो उस लड़की से उसकी माँ क्या उम्मीद कर सकती है और क्या उम्मीद कर सकता है वह जो उससे विवाह करेगा ? यह बड़ा गम्भीर विषय है ! तो मेरा हृदय पीड़ित हो गया। इसीलिए मैंने भगवान को प्रार्थना की और भगवान ने मुझे प्रेरित कर दिया। मैंने १४ फरवरी को 'वेलेंटाइन डे' की जगह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने का आह्वान किया। बच्चे-बच्चियाँ 'प्रेम दिवस' मनायें लेकिन अपने माँ-बाप को प्रेम करें। माँ-बाप ऐसे ही मेहरबान होते हैं लेकिन उस मेहरबान माता-पिता को जब आप तिलक करोगे, बेटा पिता को तिलक करे व चरण धोये और बेटी माता को तिलक करे व चरण धोये, दोनों हार पहनायें और उनकी प्रदक्षिणा करें तो माँ-बाप तो मेहरबान होंगे लेकिन माँ-बाप का जो अंतरात्मा है वह भी बरस जायेगा और मेरे बच्चे-बच्चियों की जिंदगी सँवर जायेगी।

मैंने फिर 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' शुरू किया। गणपतिजी का पूजन करो, भगवान सद्बुद्धि देंगे; माँ-बाप की भी जिंदगी सँवरेगी और बच्चे-बच्चियों की भी जिंदगी सँवरेगी।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

मातृ-पितृ भक्त श्रवणकुमार

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ०८
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २५४)
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०१४
मूल्य : ₹ १०
माघ-फाल्गुन वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

(मुखपृष्ठ 2 से 'सभी देशवासियों, विश्ववासियों का मंगल हो !' का शेष)

'वेलेंटाइन डे' की जगह पर 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाओ, मैं यही भिक्षा माँगता हूँ आप लोगों से बस ! करोड़ों माताओं व पिताओं के दिल की दुआ ले लो । हजारों-लाखों बच्चों की नष्ट होती जिंदगी को बचा लो, बस । मुझे आपका रुपया-पैसा कुछ नहीं चाहिए । आप मेरी 'जय' बोलो तो मुझे अच्छा नहीं लगता । फूल की पंखुड़ी भी आपकी मुझे नहीं चाहिए लेकिन आपका स्वस्थ, सुखी व सम्मानित जीवन हो, यह मैं चाहता हूँ । मैं यह नहीं चाहता कि मेरे को कोई यश दो, भले सभी सरकारों को यश जाय लेकिन बच्चों की जिंदगी तबाही से बचे और उनके माँ-बाप बुढ़ापे में कराहने से बचें । जो छोरे अपने को नहीं सँभाल पाते हैं वे बूढ़े माँ-बाप की क्या सेवा करेंगे ! विदेशों की तरह नर्सिंग होम में रख देंगे । हमारे यहाँ भी माँ-बाप के लिए वृद्धाश्रमों की जरूरत पड़ रही है, शर्म की बात है ! नहीं... नहीं... बच्चों की देखभाल माँ-बाप करें और माँ-बाप की देखभाल बच्चे करें, यह हमारी भारतीय संस्कृति है ।

चाहे ईसाई के बच्चे हों, वे भी उन्नत हों और ईसाई, मुसलमान, पारसी, यहूदी... सभीके माता-पिता संतुष्ट रहें । किसके माता-पिता संतुष्ट होंगे कि हमारे बेटे-बेटियाँ विद्यार्थीकाल में एक-दूसरे को फूल दें, 'आई लव यू, लव यू...' करके कुकर्म करें और यादशक्ति गँवा दें ! किसीके भी माँ-बाप ऐसा नहीं चाहेंगे । इसीलिए मैंने यह अभियान शुरू किया है और यह अभियान जिनको अच्छा नहीं लगता है वे कुछ-का-कुछ करवाकर मेरे को बदनाम करना चाहते हैं । यह मेरी बदनामी नहीं है, मानवता की बदनामी है भैया ! मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ, मेरी बदनामी आप खूब करो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है । बस, एक मानवता के उत्थान में आप अड़चन मत बनो । आप तो सहभागी हो जाओ ।

सभी धर्मों को लाभान्वित कर रहा है मातृ-पितृ पूजन दिवस

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । भारत 'हिन्दू भवन्तु सुखिनः' नहीं कहता है, 'सर्वे' कहता है । 'सर्वे' में ईसाई, पारसी सब आ गये । अभी मैं 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के लिए सिर्फ हिन्दुओं को नहीं आवाहन करता हूँ कि 'हिन्दू बच्चे मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाओ' - ऐसा नहीं, सभी मनाओ ।

मेरे गुरुजी जन्मजात कुछ सिद्धियोंवाले रहे होंगे जैसे नहाते समय नहर के पानी में भीतर ही काफी देर बैठ लेते थे, नीम के पेड़ को आज्ञा की कि 'जा, ठीक जगह पर !' तो नीम का पेड़ चल पड़ा। ऐसे गुरु का मैं चेला हूँ। और जाते समय उन्होंने अपना महाप्रयाण मेरी गोद में किया।

डीसा और अहमदाबाद के बीच दो-ढाई घंटे का रास्ता है, ७ साल में मैं ७०० बार घर आ सकता था, नहीं तो ७ बार तो आ ही जाता किसीको पता न चले इस तरह लेकिन ७ मिनट के लिए भी मैं गुरु की जानकारी में न हो ऐसे ढंग से नहीं आया। गुरु से मैं वफादार रहा तो गुरु की कृपा भी मेरे साथ वफादार है। गुरु को मैंने धोखा नहीं दिया। पिता से निभाया, गुरु से निभाया, माँ को कंधा दे के उससे भी निभाया और शिष्यों से भी हम निभा लेते हैं। जब हम शिष्यों से निभाते हैं तो फिर कुप्रचारवाले क्या करेंगे ! शिष्य भी मेरे से निभा रहे हैं। कोई कुछ निंदा की बात सुनाता है तो मेरे साधक बोलते हैं कि 'तू क्या जाने ? तू क्या जाने गुरुजी को ?...'

कोई ईसाई नहीं चाहता कि मेरी कन्या विद्यालय जाते-जाते गर्भवती हो जाय। कोई मुसलमान या यहूदी, पारसी भी नहीं चाहता तो हिन्दू कैसे चाहेगा कि मेरी कन्या विद्यालय में जाय और हवस की शिकार बन जाय। तो सभी मुसलमानों का, सभी ईसाइयों, यहूदियों, पारसियों तथा हिन्दुओं का भविष्य मंगलमय हो और उनके बच्चों का जीवन मंगलमय हो इसीलिए मैंने मातृ-पितृ पूजन दिवस अभियान छेड़ा है।

ईसाई अपने माँ-बाप का पूजन करो, मुसलमान अपने अम्मा-अब्बाजान का पूजन-सत्कार करो लेकिन 'आई लव यू', 'तू नहीं तो और सही' - यह लोफरों का रास्ता छोड़ो, नेक इन्सान बनो। आपके अब्बा-दादा ऐसे थे क्या ? बुद्ध ने 'वेलेंटाइन डे' मनाया होता तो 'भगवान बुद्ध' नहीं होते। हमने ऐसा किया होता तो हम 'आशाराम बापू' नहीं बनते। नरेन्द्रजी ने ऐसा किया होता तो 'स्वामी विवेकानंद' नहीं बनते।

अतः मैं तो चाहूँगा कि भारत के युवक-युवतियाँ तो माँ-बाप का आदर-पूजन करें लेकिन जो बेचारे विदेशी भटक गये हैं वे भी अपने माता-पिता का आदर करें। हम पड़ोस की बहन को फूल देकर बुरी नजर से देखें, पड़ोस की बहन हमको बुरी नजर से देखे - काहे को ऐसा करना ? पड़ोस की बहन का भला हो, पड़ोस के भाइयों का भला हो। माता-पिता का मंगल हो, बच्चे-बच्चियों का मंगल हो ! ईसाई भी सुखी रहें, मुसलमान भी सुखी रहें, पारसी व यहूदी भी सुखी रहें। सभी देशवासियों का, विश्ववासियों का, सभीका मंगल हो ! प्राणिमात्र सुखी रहे।

देश में यौन-उत्पीड़न के झूठे मामलों की बाढ़ : न्यायालय

केन्द्र सरकार कानून में जरूरी संशोधन करे

– मा. न्यायाधीश वीरेन्द्र भट्ट

बलात्कार एवं यौन-उत्पीड़न से संबंधित नये कानूनों की आड़ में पिछले एक वर्ष में यौन-उत्पीड़न और बलात्कार के झूठे मामलों की बाढ़ आ गयी है। मार्च २०१३ में एक व्यक्ति के खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज हुआ परंतु जाँच में आरोप झूठा पाया गया। इस पर दिल्ली की एक अदालत ने पुलिस को निर्देश दिया कि वह महिला के खिलाफ झूठा मुकदमा दर्ज कराने के संबंध में कार्यवाही करे और रिपोर्ट पेश करे। एक परिचित व्यक्ति से उस महिला ने १० हजार रुपये उधार लिये थे। रुपये वापस माँगने पर महिला ने उसे अपने घर बुलाया तथा उससे और पाँच हजार रुपये छीन के उसे कमरे में बंद कर दिया और बलात्कार का आरोप लगाकर पुलिस में शिकायत की। इसके बाद पुलिस के समक्ष महिला ने समझौता करते हुए ४० हजार रुपये और लिये। बाद में उसने उस व्यक्ति के खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज करा दिया। जब यह पता चला कि उस महिला ने छः-सात लोगों पर अलग-अलग थानों में ऐसे ही मुकदमे दर्ज करा रखे हैं और यह तथ्य अदालत के समक्ष आये तब उस महिला ने विपक्षी वकील को भी सबक सिखाने की धमकी दी तथा उस वकील पर भी थाने में बलात्कार का मामला दर्ज करा दिया।

'यह केवल एक वारदात नहीं, ऐसे कई झूठे मामलों के चलते दिल्ली को 'रेप कैपिटल' कहा जाने लगा है।' - यही टिप्पणी करते हुए जुलाई २०१३ में दिल्ली की एक अन्य अदालत ने एक ७५ वर्षीय बुजुर्ग को दुष्कर्म के झूठे मामले में बरी कर दिया था। बुजुर्ग पर उसकी घरेलू नौकरानी ने बलात्कार करने का झूठा आरोप लगाया था लेकिन बाद में वह अपने बयान से पलट गयी और कहा कि 'मैंने एक महिला और एक अन्य व्यक्ति के कहने पर यह आरोप लगाया था।'

दिल्ली के ही एक फास्ट ट्रैक कोर्ट की न्यायाधीश निवेदिता अनिल शर्मा ने भी बलात्कार के एक मामले में आरोपी को बरी करते हुए टिप्पणी की कि 'इन दिनों बलात्कार या यौन-शोषण के झूठे मुकदमे दर्ज कराने का ट्रेंड बढ़ता जा रहा है, जो चिंताजनक है। इस तरह के चलन को रोकना बेहद जरूरी है।' आरोपी पर उसकी नौकरानी ने बलात्कार का झूठा आरोप लगाया था।

हाल ही में देश की ऐसी गम्भीर अवदशा को देखते हुए सत्र न्यायाधीश वीरेन्द्र भट्ट ने द्वारका फास्ट ट्रैक कोर्ट में झूठे दुष्कर्म से जुड़े एक और मामले में आरोपी को बरी करते हुए कहा :

''दिल्ली में चलती बस में रेप की घटना के बाद ऐसा माहौल बन गया है कि यदि कोई महिला बयान दे देती है कि उसके साथ रेप हुआ है तो उसे ही अंतिम सत्य मान लिया जाता है और कथित आरोपी को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ आरोप-पत्र दाखिल कर दिया जाता है। इसके चलते देश में यौन-उत्पीड़न के झूठे मामलों की बाढ़-सी आ गयी है, अपराध के आँकड़े बढ़ रहे हैं। अतः दुष्कर्म के झूठे मामले में फँसाने पर आरोपी को मुआवजा देने के आदेश का अधिकार अदालत के पास होना चाहिए। केन्द्र सरकार को चाहिए कि वह इस दिशा में जरूरी कानूनी संशोधन करे। इसके लिए या तो सीआरपीसी (दंड प्रक्रिया संहिता) की धारा ३५७ में संशोधन किये जायें या फिर एक नयी धारा जोड़ने की जरूरत है। ऐसे मामलों में अदालत को सशक्त किया जाना चाहिए ताकि वह दुष्कर्म के झूठे आरोप से मुक्त आरोपी को मुआवजा देने का आदेश राज्य या ऐसा मामला दायर करनेवाले को दे सके।''

इस मामले में अदालत ने सख्ती दिखाते हुए शिकायतकर्ता द्वारा अदालत के समक्ष झूठे सबूत पेश करने के लिए सीआरपीसी की धारा ३४४ के अंतर्गत उस पर अलग से मामला चलाने का भी आदेश दिया। आरोप लगानेवाली महिला ने मार्च २०१३ में पुलिस में मामला दर्ज कराया था, जिसमें उसने बताया कि आरोपी ने उसके साथ दुष्कर्म किया और मामले का खुलासा करने पर उसे व उसकी बेटी को मारने की धमकी भी दी। मुकदमे की सुनवाई के दौरान न्यायालय ने कथित पीड़िता के बयानों में कई जगह विरोधाभास देखा और बाद में पूरे मामले को झूठा पाया।

न्यायाधीश ने आगे कहा कि ''दुष्कर्म के कई मामले ऐसे होते हैं जिनमें आरोपी को झूठा फँसाया जाता है। इस दौरान आरोपी को पुलिस हिरासत में या जेल में जाना पड़ता है और मानसिक, शारीरिक प्रताड़ना के साथ सामाजिक तिरस्कार के दौर से गुजरना पड़ता है। बाद में जब सुनवाई के दौरान उस पर लगे आरोप झूठे साबित होते हैं, तब भी उसके लिए समाज में जीना कष्टकर होता है। इन बातों को देखते हुए दुष्कर्म के झूठे मामलों में बरी हुए लोगों को मुआवजा पाने का पूरा हक है।''

('दैनिक जागरण' के आधार पर)

गरीबों-आदिवासियों की अथक रूप से सेवा में संलग्न रहनेवाले, उनका धर्म-परिवर्तन रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले और देशवासियों में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था व स्वाभिमान जगानेवाले पूज्य बापूजी और उनके परिवार को भी झूठे मामलों में फँसाया गया है। अब देखना यह है कि सरकार इन तीव्र गति से बढ़ते झूठे बलात्कार के मामलों की रोकथाम के लिए कौन से अहम

संत-सम्मेलन, जोधपुर

निर्दोष पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईंजी की रिहाई के लिए संत-समाज एवं जागरूक जनता द्वारा प्रयत्न सतत जारी हैं। जगह-जगह संत-सम्मेलनों के द्वारा संस्कृति एवं संतों पर हो रहे षड्यंत्रों का पर्दाफाश किया जा रहा है। इसी शृंखला में अहमदाबाद में १४ जनवरी को और जोधपुर में १५ जनवरी को सम्पन्न हुए विशाल धर्म रक्षा संत-सम्मेलनों में विभिन्न धर्मों के आचार्यों एवं गणमान्य हस्तियों ने भाग लिया। जोधपुर सम्मेलन में विभिन्न पंथों, सम्प्रदायों एवं अखाड़ों के विभिन्न संत, संगठनों के प्रमुख, प्रतिष्ठित हस्तियाँ एवं हजारों लोग सम्मिलित हुए।

अब तो जमानत मिलनी चाहिए

- फिरोज खान
'महाभारत' धारावाहिक के अर्जुन

हिन्दुस्तान एक धर्मप्रधान देश है, जहाँ धर्म पलते हैं। माँ और बाप आपको चलना सिखाते हैं, दुनिया में रहना सिखाते हैं लेकिन मात्र संत ही हैं जो आपको संस्कृति और सभ्यता सिखाते हैं। दुःख की बात है कि हमें आज धर्म की ही रक्षा के लिए खड़े होना पड़ रहा है लेकिन यह करवाया किसने ? उन दुर्योधनों ने करवाया जो पांडवों से खुश कभी नहीं रह सकते हैं। तो आज अर्जुन यह कहेगा कि कौरवो ! उस युग में मैंने तुम्हारा सर्वनाश किया था और यकीन मानिये, इस युग में भी तुम्हारा सर्वनाश होगा। जब-जब संतों पर अत्याचार हुआ है, तुम्हारा तो सत्यानाश हुआ है।

सत्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। सब जानते हैं कि आज की दुनिया में कोई एक वक्त की रोटी नहीं देता किसीको। लेकिन एक ऐसे संत हैं जो महिलाओं के भी उत्थान के लिए आश्रम बनाते हैं, जो देश के गरीबों, अनाथों को खाना-पीना, रहना - सब मुफ्त में देकर कहते हैं भजन करो, भोजन करो और साथ में दिहाड़ी (दक्षिणा) भी ले जाओ, उन संत का तुम अनादर करोगे ? कब तक ?

हमारी सभ्यता, संस्कृति है कि हम अपने माँ-बाप का पालन करें लेकिन आप अपने दिल पर हाथ रख के कहिये कि हममें से कितने लोग अपने माँ-बाप के चरण रोज सुबह स्पर्श करते हैं। और यह बात कोई और नहीं सिखाता लेकिन ये संत सिखाते हैं। पूज्य बापूजी ने सिखाया कि १४ फरवरी को 'वेलेंटाइन डे' को भूलकर माता और पिता की पूजा करो तो तुम्हारा कल्याण हो जायेगा ! ऐसे संत पर जुल्म करोगे ? तुम्हें खौफ नहीं है कि इसका परिणाम क्या होगा ? परिणाम तो वह होगा कि दुनिया देखेगी और यकीन मानो, आज ६ करोड़ हैं, कल ६० करोड़ होंगे।

कहते हैं कि गौ हमारी माता है, बड़ी पूजनीय है। मैं उस सरकार के मुख्यमंत्री से पूछना चाहता हूँ जो अभी

(उस पद पर) नहीं हैं, कि इसी राजस्थान में गौहत्यारों के हाथों से छुड़ाकर ५००० गायों के लिए बापूजी ने गौशाला खुलवायी और उनकी नस्ल भी सुधारी और उनके झरण व गोबर से गौ-चंदन धूपबत्ती बनायी जा रही है, जिससे कई परिवारों के लिए रोजी-रोटी के द्वार खुल गये। राजस्थान सरकार ने आदर्श गौशाला के रूप में बापूजी की गौशाला को पुरस्कृत भी किया। सभी सेवाएँ आदर्श हैं - बाल संस्कार केन्द्र, युवा सेवा संघ, महिला उत्थान मंडल, सत्साहित्य और 'ऋषि प्रसाद' ने तो गजब कर दिया! और 'ऋषि दर्शन' डीवीडी का तो कहना ही क्या !! सभी आदर्श ही आदर्श ! जेल का माहौल भी बापूजी ने वैकुंठमय बना दिया। ऐसे संत के विषय में आप कब तक अपनी तानाशाही करोगे ? अब जमानत मिल जानी चाहिए।

आप लोग तो वे हैं कि
अगर चाहें तो पहाड़ को जर्रा बना दें।
और अगर एकत्रित हो जायें तो
बापू को भी बाहर ला दें ॥
बापू ! मेरी सारी राहें तेरी राहों से मिलती हैं।
मैं तेरे दर से उठकर जाऊँ भी तो कहाँ जाऊँ ?

इनके विश्वास को मैं मानता हूँ - श्री पंकज धीर

'महाभारत' धारावाहिक के कर्ण

मैं एक ऐसे देश का नागरिक हूँ जिसकी संस्कृति, जिसकी धरोहर हजारों-लाखों साल पुरानी है और वह टिकी हुई है तो सिर्फ संतों पर। मैं इस चीज को मानता हूँ और समर्थन करता हूँ इसलिए मैं यहाँ हूँ। और यहाँ पर जितने ज्ञानी लोग हैं जो कुछ इन्होंने कहा इनकी बातों को, इनके विश्वास को मैं मानता हूँ।

जीत आपकी ही होगी - श्री मुकेश खन्ना

'महाभारत' धारावाहिक के भीष्म पितामह तथा 'शक्तिमान' धारावाहिक के शक्तिमान

आज के युग में आशाराम बापूजी खुद सबसे बड़े शक्तिमान हैं। आज अँधेरा अपना राज फैलाने की कोशिश कर रहा है। जगह-जगह आप देखते हैं संतों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है। मैं इसके पूरा खिलाफ हूँ।

यह हमारा संत-समाज हमारी संस्कृति, हमारी परम्परा का राजनायक है। जिस तरह से आप एक राजनायिक का सम्मान करते हैं, उस तरह से इन लोगों का सम्मान क्यों नहीं करते ? ये भी उसी सम्मान के अधिकारी हैं। इनके लिए क्यों नहीं आप विशेष व्यवस्था करते ? इनके साथ कोई भी व्यवहार करे तो उसके अंदर एक इज्जत रहनी चाहिए जिसके ये हकदार हैं।

यह संघर्ष का युग है। जीत हमेशा सत्य की होती है, असत्य की पराजय होती है और सत्य आप लोगों के साथ है तो आप लोगों की जीत होगी।

सत्य की सदैव जीत होती है और कलियुग में भी अवश्य ही होगी

- श्री कैलाश भंसाली, विधायक, जोधपुर

आज देश में यह हालत है कि धर्म को बदनाम करने के लिए नाना प्रकार के षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। उसमें अनेकानेक कानून लाये जा रहे हैं। एक ऐसा कानून भी लाया जा रहा है कि जिससे धर्माचार्यों पर उँगली उठायी जाने की आशंका बढ़ेगी। मैं ऐसे किसी कानून का विरोधी हूँ जो संत-समाज को तंग करने के लिए बनाया जा रहा है। सत्य की सदैव जीत होती है और कलियुग में भी अवश्य ही होगी।

मानव-विकास का हर कार्य बापूजी ने किया है

- संत कृपारामजी महाराज , गुरुकृपा आश्रम, जोधपुर

संत और सैनिक दोनों की राशि एक, दोनों का उद्देश्य एक, फर्क है तो कार्यशैली में। सैनिक गोली से समझाता है और संत उपदेश से समझाते हैं। जब-जब संत आपके बीच आते हैं तो वे सबकी आध्यात्मिक उन्नति करने हेतु आते हैं। यह भगीरथ कार्य बापूजी भी कर रहे हैं। उन्होंने केवल अपने शिष्यों को नहीं बल्कि गैर-शिष्यों को भी बदलने का प्रयास किया है, मनोविकारों को नष्ट करने का प्रयास किया है। मानव-विकास का जो कार्य है, वह बापूजी ने किया है।

जो अपनी भारतभूमि को माँ समझ के और घर-परिवार त्याग के संत बनकर देश की सेवा में लगे हैं और देश के लिए कार्य करते हैं, चाहे वह भ्रूणहत्या प्रथा को मिटाना हो, चाहे वह दहेज प्रथा को मिटाना है, चाहे नशा जैसी बहुत बड़ी विकृति को समाज से मिटाना हो, ऐसे बड़े-बड़े स्तर पर जब कार्य करते हैं और ऐसे संतों को जब अपमानित करने के लिए साजिश की जाती है तब मेरे मन में दुःख होने लगता है। ऐसी स्थिति में हम सबको जागना होगा और संकल्प लेना होगा।

मैं मीडिया के बंधुओं से कहना चाहता हूँ कि बापू ने इतने वर्षों से जो भलाई के काम किये हैं, कृपया उनको भी टीवी पर दिखला दीजिये।

बापूजी को जेल, अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र है !

- श्री वासुदेवानंद गिरि, कैलाश आश्रम, ऋषिकेश

संत हमारे राष्ट्र की धरोहर हैं। इन्होंने देश-विदेश में ज्ञान-ध्यान, जप-तप, योग, तपस्या का शंखनाद किया है। इस शंखनाद के, अध्यात्म के शिरोमणि परम पूज्य आशाराम बापूजी महाराज हैं। इन्होंने हर घर में, हर साधक के मन में एक दिव्यता, ओजस्विता और ब्रह्मज्ञान की धारा का प्रवाह प्रवाहित किया है।

जीवनधारा को बहने से रोकनेवाले अगर षड्यंत्रकारी कोई भी हों, उनको जड़ से उखाड़कर फेंक दिया जायेगा। बापूजी के ऊपर जो आरोप लगे हैं वे निराधार हैं। हमारे प्यारे परम पूज्य आशारामजी बापू जेल में हैं। यह राष्ट्रीय षड्यंत्र नहीं, यह अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र है। इसलिए सभी संतों, भक्तों से मेरा निवेदन है कि अपने संकल्पबल को दृढ़ करें। अपने अंदर का बल जागृत करें और इन षड्यंत्रकारियों के षड्यंत्र को नष्ट करें।

बाबा दाताशाहजी महाराज अध्यक्ष, भगवान आश्रम सेवादल, पंजाब : साथियो ! समय आ गया है इकट्ठे होकर चलने का । आज फिर एक युद्ध जीतने का समय आ गया है। हम हर तरह आपके साथ हैं।

जुल्म करना पाप है मगर सहना महापाप है, इसलिए अब तो जागो !

– जगद्‌गुरु श्री पंचानंद गिरि जूना अखाड़ा

सनातन धर्म एक ऐसा धर्म है जिसके देवी-देवताओं का अपमान सरेआम हो रहा है। आज तक जितना भी संतों पर अत्याचार हुआ है, वह भ्रष्ट राजनेताओं ने किया है और मीडिया का हौसला इसलिए बुलंद हुआ क्योंकि भ्रमित लोगों ने उनका साथ दिया। अगर हम सनातन धर्म पर हो रहे प्रहारों को रोकना चाहते हैं तो हमें पूरी तरह से धर्म को समर्पित होना पड़ेगा वरना एक के बाद एक देश के अंदर ऐसे ही हालात हमारे साथ होते रहेंगे और हम मूक दर्शक बनकर देखते रहेंगे।

अरे, भगवान ने कहा है कि जुल्म करना पाप है तो जुल्म सहना महापाप है। इस बात को आप क्यों अनदेखा करते हो ? आप अपने संतों और देवी-देवताओं के अपमान के विरुद्ध लड़ना शुरू करें। अगर आप उनके मान-सम्मान के लिए लड़ेंगे तभी भगवान आपकी रक्षा करेंगे।

चुनाव के पहले ही संतों पर होता है षड्‌यंत्र

– संत वरुणदासजी, भागवत कथाकार, अयोध्या

जब-जब देश में चुनाव आता है तो ऐसे षड्‌यंत्र होने लगते हैं । सनातन धर्मावलम्बियों की भावनाओं को ध्वस्त करने के लिए सनातन धर्म के किन्हीं बड़े महापुरुष को किसी-न-किसी षड्‌यंत्र के तहत जेल में बंद किया जाता है। २००४ में जगद्‌गुरु शंकराचार्यजी को जेल में बंद किया गया था।

२००९ का चुनाव आता है और आप २००८ से ही देखने लगते हैं कि तमाम हिन्दुओं को बदनाम करने के प्रयत्न किये जाते हैं। फिर अभी चुनाव का समय आया तो भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक, पूरे देश के अंदर वंचित, शोषित, पीड़ित आदिवासियों की सेवा करनेवाले और विदेशी मिशनरियों से बचाते हुए सनातन धर्म का प्रचार करनेवाले परम पूज्य आशारामजी बापू को जेल में बंद कर दिया गया एक षड्‌यंत्र में फँसाकर !

किस पर नाराज, किस पर प्रसन्न होते हैं भगवान ? (पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

* गरीब होकर भी जो दानवीर है, उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं। * जो धनी है, गुणवान है फिर भी नम्र है, उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं। * जो बुढ़ापे में भी दुष्कर्म करता है, उस पर भगवान नाराज होते हैं।

* जो धनवान होकर भी दान-पुण्य नहीं करता, उसकी सम्पत्ति उसको फँसानेवाली होती है, नरकों में ले जानेवाली होती है। * विद्वान, बुद्धिमान होने पर भी जो पापकर्म करता है, उस पर भगवान जल्दी नाराज होते हैं।

स्वामी चक्रपाणिजी महाराज राष्ट्रीय अध्यक्ष, संत महासभा : अगर किसी भी राष्ट्र को नष्ट करना हो तो वहाँ के संत, संस्कृति और भाषा पर प्रहार कर-करके उन्हें खत्म कर दो; निश्चित रूप से वह राष्ट्र खत्म हो जायेगा। संतों ने निर्णय लिया है कि संसद में संत आशारामजी बापू के खिलाफ जिन लोगों ने अपशब्द बोले और सुने, उन सभी राजनीतिक पार्टियों का संत-समाज निंदा-प्रस्ताव पास करता है।

हमारा संविधान कहता है कि ९९ अपराधी छूट जायें तो चलेगा लेकिन एक बेकसूर को सजा न हो। हम संविधान का समर्थन करते हैं लेकिन ये जो ९९ अपराधी मिलकर एक बेकसूर को सजा दे रहे हैं, इसे हम कदापि बर्दाश्त नहीं करेंगे।

उपरोक्त संतों एवं प्रतिष्ठितों के अलावा शिव-कथावाचक श्री फूलकुमार शास्त्री (जम्मू), भागवत कथाकार श्री रामगोपाल शास्त्री (वृंदावन), श्री पंचमदासजी महाराज (जौनपुर), महामंडलेश्वर श्री परमात्मानंदजी महाराज, महामंडलेश्वर श्री कमलानंदजी महाराज (ऋषिकेश), योगगुरु स्वामी हर्षानंदजी, श्री प्रशांतानंदजी महाराज (ऋषिकेश), हिन्दू जनजागृति समिति के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री रमेश शिंदे, सेनाचार्य स्वामी श्री नरेशानंदजी महाराज (शुक्रताल), श्री चिदानंद मुनिजी (भुवनेश्वर), श्री नागेन्द्र ब्रह्मचारीजी (छिंदवाड़ा), श्री मणिकांत शास्त्रीजी (अयोध्या), भारत जागृति मोर्चा के अंतर्राष्ट्रीय प्रवक्ता महंत श्री घनश्यामानंदजी, जैन धर्म के धर्माचार्य ललित प्रभजी और चन्द्रप्रभजी तथा ऑल इंडिया मुस्लिम इत्तिहाद कमेटी, दिल्ली के प्रमुख इकरार खान तथा भुट्टो खान एवं सार्थक संगठन की प्रमुख वसुंधरा शर्मा आदि ने भी जोधपुर के संत-सम्मेलन में उपस्थित हो देशवासियों को संस्कृति-रक्षा हेतु अपना संदेश दिया।(स्थानाभाव के कारण सभीके वक्तव्य नहीं दे पा रहे हैं। जोधपुर, अहमदाबाद एवं भरेंगाँव, जि. राजनांदगाँव (छ.ग.) के संत-सम्मेलनों के अन्य वक्तव्यों हेतु पढ़ें 'लोक कल्याण सेतु' फरवरी २०१४)

सनातन संस्था को फँसाने का था उद्देश्य

- श्री आनंद जाखोटिया, संस्था प्रवक्ता

पुलिस द्वारा प्रविष्ट किया गया जो प्रथमदर्शनी ब्यौरा था, वह केवल सनातन संस्था को फँसाने के उद्देश्य से था। - न्यायाधीश की स्पष्टोक्ति

१६ अक्टूबर २००९ को गोवा के मडगाँव नगर में हुए विस्फोट प्रकरण में फँसे सनातन संस्था के ६ लोगों को विशेष न्यायालय के न्यायाधीश श्री पी. वी. सावईकर ने ३१ दिसम्बर को निर्दोष मुक्त किया। न्यायाधीश ने निर्णय दिया कि अभियोग (सरकारी) पक्ष द्वारा प्रस्तुत परिस्थितिजन्य प्रमाण सनातन संस्था के लोगों को दोषी सिद्ध नहीं करते हैं।

सनातन संस्था के प्रवक्ता आनंद जाखोटिया ने कहा कि सनातन संस्था के ६ साधकों को युवावस्था के चार अनमोल वर्ष कारागृह में बिताने पड़े। उनके व्यर्थ गये इन महत्त्वपूर्ण वर्षों की भरपाई कौन करेगा ? इन साधकों पर हुए अत्याचार का परिमार्जन करने के लिए शासन इनको हानि-भरपाई देने की सज्जनता दिखाये।

बकवास पर बकवास !

कच्छ (गुज.) के शिवाभाई, जो शारीरिक रूप से पतले-दुबले हैं, कुँवारे हैं, उनके बारे में दिखाया गया कि वे पाली (राज.) के गोमाराम हैं। १७ साल पहले अपने २ बच्चों को छोड़कर भाग गये थे। अभी शिवा नाम रख के बापूजी के आश्रम में रह रहे हैं। तो यदि १७ साल पहले २ बच्चों को छोड़ा है तो एक तकरीबन २६ वर्ष का होगा, दूसरा उससे छोटा। २६ साल का बेटा और बाप ३२ साल का !

राजस्थान के अखबारों में आया कि बापूजी अजमेर में ताँगा चलाते थे और चाय बेचते थे। अहमदाबाद के अखबारों में लिखा था कि आश्रमवासियों ने अड़ोस-पड़ोस के १० हजार लोगों को भगा दिया और कब्जा कर लिया। क्या यह सम्भव है ? क्या पुलिस चुप बैठती ? और क्या बापूजी ऐसा करने देते ? ऐसी वाहियात बातों से कुप्रचार करनेवालों की बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है।

पहले छपवाया कि पेढमाला (जि. साबरकांठा, गुज.) में अरबों की जमीन कब्जा कर ली। तो बापूजी ने घोषणा की कि १ करोड़ १० लाख में ले लो और गाय व गरीबों की सेवा करते रहना। और धीरे-धीरे १०-१० लाख करके वे सभी पैसे भी वापस कर देंगे। सेवाकार्य चालू रखना।

अब बकवास चल पड़ी है १० हजार करोड़ की। वे लोग १००-२०० करोड़ रुपये दे दें तो हम शिशु विहार खोलेंगे और १० हजार करोड़ की तथाकथित सम्पत्ति उनके नाम कर देंगे। १७ साल पहलेवाला गोमाराम अभी शिवा है... आश्रमवासियों ने गुंडागर्दी की और १० हजार लोग अपने घर छोड़कर चले गये... बकवास पर बकवास ! और अब यह १० हजार करोड़ की बकवास शुरू की। कोई १००-२०० करोड़ निकाले तो तथाकथित १० हजार करोड़ की सम्पत्ति उनके नाम करवा देंगे।

देश में यौन-उत्पीड़न के झूठे मामलों की बाढ़-सी आ गयी है (देखें पृष्ठ ५ पर दी गयीं विभिन्न न्यायाधीशों की टिप्पणियाँ)। पुलिस सामान्य व्यक्तियों को डरा-धमका के, मार-पीट के और बड़े आदमियों को उत्पीड़ित करके (हैरेसमेंट करके) कागजों पर हस्ताक्षर ले लेती है। पूज्य बापूजी से भी ऐसे ही हस्ताक्षर ले लिये, कहा कि पढ़ के सुनायेंगे लेकिन अंत में आँखों से अंगारे निकालने लगे।

न बापूजी ऐसा कर सकते हैं, न कन्या ऐसा कह सकती है लेकिन लगे हैं बापूजी को फँसाने में। सरासर झूठ, झूठ, झूठ ! सोचने की बात है कि अमेरिका से एमएस किया हुआ, इतना पढ़ा-लिखा शरद जैसा ब्रह्मचारी और शिल्पी, जो खानदानी माता-पिता की संतान है और पवित्र जीवन जीती है, वे जिसे चक्कर आते हों ऐसी कन्या को २००० कि.मी. से ज्यादा की दूरी तय करके ऐसे घिनौने कर्म के लिए भेज सकते हैं क्या ? ऐसे कर्म के लिए किसीको प्रेरित कर सकते हैं क्या ? दुष्कर्म नहीं हुआ, खरोंच तक नहीं आयी ऐसा मेडिकल रिपोर्ट कहती है। कन्या ने भी दुष्कर्म का जिक्र नहीं किया। मीडिया ने यूँ ही हल्ला मचा दिया। कितना अन्याय ! - श्री ऋषभ शेहरावत, ऋषि प्रसाद प्रतिनिधि

कितना करुणामय हाथ है भगवान का !

कभी-कभी विपदा भी बड़ी सम्पदा का द्वार खोल देती है। आप सावधान रहना, कभी कष्ट आ जाय तो देख लेना कि कष्ट के पीछे उसका कितना करुणामय हाथ है ! कष्ट है तो फिर एकांत में रहिये, ईश्वर के प्यारों का जो सत्संग है, उसका मनन करिये, कष्ट आपके लिए बड़ा तोहफा हो जायेगा, बड़ी प्रसादी हो जायेगा। कष्ट आये तो घबराइये नहीं, कष्ट देनेवाले पर क्रुद्ध होइये नहीं। कष्ट आये तो विवेक करके संसार की आसक्ति को, वासना को मिटाने का रास्ता खोजिये। - पूज्य बापूजी

शिवत्व की विशेष प्रसन्नता पाने का पर्व महाशिवरात्रि

- पूज्य बापूजी

(महाशिवरात्रि : २७ फरवरी)

भगवान शिव कहते हैं :

न स्नानेन न वस्त्रेण न धूपेन न चार्चया।
तुष्यामि न तथा पुष्पैर्यथा तत्रोपवासतः ॥

'हे पार्वती ! महाशिवरात्रि के दिन जो उपवास करता है वह निश्चय ही मुझे संतुष्ट करता है । उस दिन उपवास करने पर मैं जैसा प्रसन्न होता हूँ, वैसा स्नान, वस्त्र, धूप और पुष्प अर्पण करने से भी नहीं होता।'

उत्तम उपवास कौन-सा ?

'उप' माने समीप 'वास' करना, अपनी आत्मा के समीप जाने की व्यवस्था को बोलते हैं 'उपवास'। भगवान जितना उपवास से प्रसन्न होते हैं उतना स्नान, वस्त्र, धूप-पुष्प आदि से प्रसन्न नहीं होते।

उप समीपे यो वासो जीवात्मपरमात्मनोः।

'जीवात्मा का परमात्मा के निकट वास ही उपवास है।' जप-ध्यान, स्नान, कथा-श्रवण आदि पवित्र सद्गुणों के साथ हमारी वृत्ति का वास ही 'उपवास' है। ऐसा नहीं कि अनाज नहीं खाया और शकरकंद का सीरा खा लिया और बोले, 'उपवास है।' यह उपवास का बिल्कुल निम्न स्वरूप है। उपवास का उत्तम स्वरूप है कि आत्मा के समीप जीवात्मा का वास हो। मध्यम उपवास है कि हफ्ते में एक बार और ऐसे पवित्र दिनों-पर्वों के समय अन्न और भूनी हुई वस्तुओं का त्याग करके केवल जरा-सा फल आदि लेकर नाड़ियों की शुद्धि करके ध्यान-भजन करें, यह दूसरे नम्बर का उपवास है। तीसरे नम्बर का उपवास है कि 'चलो, रोटी-सब्जी छोड़ो तो राजगिरे के आटे की कढ़ी, साबुदाने की खिचड़ी और सिंघाड़े के आटे का हलुआ खाओ।' रोज जितना खाते थे और जठरा को जितनी मेहनत करनी पड़ती थी, उससे भी ज्यादा व्रत के दिन मेहनत करनी पड़ती है। यह उपवास नहीं हुआ, मुसीबत मोल ले ली। अथवा तो कुछ लोग उपवास के दिन कुछ नहीं खाते, 'चलो, जल ही पियेंगे।' और दूसरे दिन फिर पारणा करते हैं तो लड्डू खाते हैं, पेट एकदम साफ होगा और फिर एकदम भारी खुराक ! जैसे गाड़ी

एकदम बंद और फिर चालू करके चौथे गियर में डाल दी तो क्या हाल हो जायेगा ? उपवास करने की कला, रीत जान लें और शिवरात्रि मनाने की कला सीख लें।

महान बनने का अवसर : महाशिवरात्रि व्रत-तप

महाशिवरात्रि माने कल्याण करनेवाली रात्रि, मंगलकारी रात । फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी शिवरात्रि है, कल्याणकारी रात्रि है। यह तपस्या का पर्व है।

शिवस्य प्रिया रात्रिर्यस्मिन् व्रते अंगत्वेन
विहिता तद्व्रतं शिवरात्र्याख्यम्।

शिवजी को जो प्रिय है ऐसी रात्रि, सुख-शांति-माधुर्य देनेवाली, शिव की वह आनंदमयी, प्रिय रात्रि जिसके साथ व्रत का विशेष संबंध है, वह है शिवरात्रि और वह व्रत शिवरात्रि का व्रत कहलाता है। जीवन में अगर कोई-न-कोई व्रत नहीं रखा तो जीवन में दृढ़ता नहीं आयेगी, दक्षता नहीं आयेगी, अपने-आप पर श्रद्धा नहीं बैठेगी और सत्यस्वरूप आत्मा-परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती है । 'यजुर्वेद' में आता है :

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

तो यह शिवरात्रि जैसा पवित्र व्रत आपके मन को पुष्ट व पवित्र करने के लिए, मजबूत करने के लिए आता है। आपको महान बनने का अवसर देता है।

महाशिवरात्रि में रात्रि-पूजन का विधान क्यों ?

महाशिवरात्रि की रात्रि को चार प्रहर की पूजा का विधान है । प्रथम प्रहर की पूजा दूध से, दूसरी दही से, तीसरी घी से और चौथी शहद से सम्पन्न होती है । इसका भी अपना प्राकृतिक और मनोवैज्ञानिक रहस्य है । हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक - चारों स्थितियाँ उन्नत हों इसलिए पूजा का ऐसा विधान किया गया।

इस महाशिवरात्रि के व्रत में रात में ही पूजन क्यों ? यह पूजन रात्रि में इसलिए है क्योंकि एक ऋतु पूरी होती है और दूसरी ऋतु शुरू होती है । जैसे सृष्टिचक्र में सृष्टि की उत्पत्ति के बाद नाश और नाश के बाद उत्पत्ति है, ऐसे ही ऋतुचक्र में भी एक के बाद एक ऋतु आती रहती है। एक ऋतु का जाना और नयी ऋतु का आरम्भ होना - इसके बीच का काल यह मध्य दशा है (महाशिवरात्रि शिशिर और वसंत ऋतुओं की मध्य दशा में आती है)। इस मध्य दशा में अगर जाग्रत रह जायें तो उत्पत्ति और प्रलय के अधिष्ठान में बैठने की, उस अधिष्ठान में विश्रांति पाने की, आत्मा में विश्रांति पाने की व्यवस्था अच्छी जमती है । इसलिए इस तिथि की रात्रि 'महाशिवरात्रि' कही गयी है।

वैसे कई उपासक हर मास शिवरात्रि मनाते हैं, पूजा-उपासना करते हैं लेकिन बारह मास में एक यह शिवरात्रि है जिसको महाशिवरात्रि, अहोरात्रि भी कहते हैं। जन्माष्टमी, नरक चतुर्दशी, शिवरात्रि और होली, ये चारों महारात्रियाँ हैं । इनमें किया गया जप-तप-ध्यान अनंत गुना फल देता है।

शिवपूजा का तात्त्विक रहस्य

ऋषियों ने, संतों ने बताया है कि बिल्वपत्र का गुण है कि वह वायु की बीमारियों को हटाता है और बिल्वपत्र चढ़ाने के साथ रजोगुण, तमोगुण व सत्त्वगुण का अहं अर्पण करते हैं। पंचामृत मतलब पाँच भूतों से जो कुछ मिला है वह आत्मा-परमात्मा के प्रसाद से है, उसको प्रसादरूप में ग्रहण करना । और महादेव की आरती करते हैं अर्थात् प्रकाश में जीना। धूप-दीप करते हैं अर्थात् अपने सुंदर स्वभाव की सुवास फैलाना।

शिवजी त्रिशूल धारण करते हैं। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीनों शूल देते हैं। जाग्रत में चिंता, स्वप्न में अटपटी-सी स्वप्नसृष्टि और गहरी नींद (सुषुप्ति) में अज्ञानता - इन तीनों शूलों से पार करनेवाली महाशिवरात्रि है । जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति बदल जाती है फिर भी जो नहीं बदलता, उस आत्मा में आने की रीत बतानेवाला शिवरात्रि का जो सत्संग मिल रहा है, उससे जीव तीनों गुणों से पार हो जाता है।

महाशिवरात्रि पूजन का उद्देश्य

वेद परमात्मा के विषय में 'नेति-नेति' कहते हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश - ये नहीं, ये प्रकृति हैं, इनसे परे जो है वह परमात्मा है। उस परमात्मा में यह जीवात्मा विश्रांति पाये, उस पूजा-विधि की व्यवस्था और विशेष रूप से फले ऐसा दिन ऋषियों ने चुना और वह दिन है महाशिवरात्रि का।

इस शिवरात्रि की एक कथा प्रचलित है कि एक व्याध दिनभर भटकता रहा, शिकार नहीं मिला। रात्रि में उसके पास जो पानी का लोटा था उसे भर के वह किसी जलाशय के किनारे बेलवृक्ष पर बैठ गया। एक प्रहर में एक हिरण आया, दूसरे प्रहर में दूसरा, तीसरे प्रहर में तीसरा और चौथे प्रहर में चौथा हिरन आया लेकिन जब भी वह शिकार करने की तैयारी करता और हिरन के द्वारा दया-याचना होती तो वह उनको क्षमा करता गया और 'अच्छा, फिर आना...' ऐसा कहता गया। उसके हिलने-डुलने से जाने-अनजाने पानी के लोटे को हाथ लगता, पानी की दो बूँदें वृक्ष के नीचे स्थित शिवलिंग पर गिरतीं और ऐसे ही बैठे-बैठे बिल्वपत्र तोड़ता था, वे बिल्वपत्र नीचे (शिवलिंग पर) गिरते जाते थे। संयोगवश वह महाशिवरात्रि का दिन था। अनजाने में उसकी शिवपूजा हुई और भगवान शिव प्रसन्न हुए तो दूसरे जन्म में वह बड़ा सम्राट हुआ, ऐसी कथा भी आती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि अनजाने में भी अगर पुण्यमय तिथि का जागरण हो जाता है, त्याग हो जाता है और दूसरे के दुःख में आप थोड़ा अपने स्वार्थ को छोड़ देते हैं तो आप सम्राट बनने के योग्य हो जाते हैं। लेकिन सम्राट बनना ही जीवन का लक्ष्य नहीं है। सम्राट पद भोगकर भी गिरना पड़ता है। अगर उस व्याध को कोई संत मिल जाते तो उस महाशिवरात्रि की पूजा का फल दूसरे जन्म में सम्राट बनने तक सीमित नहीं होता। शिवजी जिस परमात्मा में विश्रांति पाकर शिवतत्त्व में निमग्न रहते हैं, मनुष्यमात्र अपने ऐसे स्वाभाविक शिवतत्त्व में मग्न रहने का अधिकारी है। इसी जन्म में उस तत्त्व का साक्षात्कार कर लें।

जिस पुत्र-परिवार और मेरे-तेरे में हम लोग जगते हैं (सतर्क एवं रचे-पचे रहते हैं) उससे शिवजी बेपरवाह हैं और जिस शिवतत्त्व से हम बेपरवाह हैं उसमें शिवजी सदा निमग्न रहते हैं। पार्वतीजी जा रही हैं मायके लेकिन शिवजी तेरे-मेरे में नहीं अटके।

संकर सहज सरूपु सम्हारा। लागि समाधि अखंड अपारा॥

जो सहज स्वरूप में निमग्न रहते हैं ऐसे परमात्म-शिव की जो उपासना, आराधना करता है उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं लेकिन जीवन मनोकामना पूर्ण करने के लिए नहीं है। असली जीवन तो मन की तुच्छ कामनाएँ निवृत्त करके मन की कामनाएँ जहाँ से पूर्ण और अपूर्ण दिखती हैं, उस जीवनदाता को पहचानने के लिए है, 'मैं' रूप में जानने के लिए है, साक्षात्कार करने के लिए है। ऐसा ज्ञान अगर गुरुओं के द्वारा मिल जाय और हम पचा लें तो हमें एकाध शिवरात्रि पर्याप्त हो जायेगी शिवतत्त्व में जगने के लिए।

इरादा हो पक्का तो हर जगह छक्का !

छल-कपट से, अश्रद्धा से, अब्रह्मचर्य से, दुराचार से दिल मलिन हो जाता है । सदाचार, ब्रह्मचर्य, एकाग्रता, श्रद्धा - इन सद्गुणों से भगवत्प्राप्ति जल्दी होती है । एकाग्रता कैसे बढ़ायें ? भगवान के सामने देखें और ॐ का लम्बा उच्चारण करें । जितनी देर उच्चारण, उतनी देर शांति... । दृष्टि अर्धोन्मिलित, कभी-कभार आँखें बंद हो जायें तो हरकत नहीं है । आनंद आने लग जायेगा । इससे एकाग्रता बढ़ेगी । पढ़ने में भी सफलता और भगवान को पाने में भी सफलता !

श्रद्धा, अडिग श्रद्धा ! परीक्षा लेने को आये सप्तऋषि और पार्वतीजी की श्रद्धा तोड़ने के लिए सब कुछ कहा लेकिन पार्वतीजी ने कहा कि ''आप तो बोलते हैं न, कि 'तुम शिवजी को नहीं पा सकती हो' लेकिन एक जन्म में नहीं मिले तो दूसरे में, तीसरे में, करोड़ जन्म बीत जायें लेकिन मैं तो शिवजी को ही वरूँगी ।''

जन्म कोटि लगि रगर हमारी ।
बरउँ संभु न त रहउँ कुआरी ।।

(श्री रामचरित. बा.कां. : ८०.३)

ऐसी दृढ़ श्रद्धावाला व्यक्ति सब कुछ पा सकता है । पर्वतीय इलाके में रहनेवाले एक व्यक्ति की कन्या श्रद्धा के बल से पार्वती माता हो गयी । दृढ़ श्रद्धा !

मेरे गुरुजी के नैनीताल के आश्रम में मैं गया । गुरुजी तो कहीं बाहर गये थे लेकिन गुरुजी के आश्रम के पास ही में दूसरे किसीका आश्रम था । उसका बहुत बड़ा नाम था । पानी को यूँ देखकर दूध बना देता था । बहुत लोग दूर-दूर से आते थे । उसने मेरा स्वागत भी किया था, सम्मान किया था । उस महाराज ने मेरे लिए खास पूरियाँ बनवायीं, बड़े प्रेम से मुझे भोजन कराया लेकिन फिर धीरे-से मुझे चेला बनाने के चक्कर में मेरे गुरुजी के लिए थोड़ा-सा कुछ उसने मुँह जरा खट्टा-मीठा दिखाया । मैंने फिर कभी उसका मुँह नहीं देखा, बड़ा हो तो क्या है ! मेरा सत्कार करे तो क्या हो गया ! मैंने अपने मन में मेरे भगवान लीलाशाहजी बापू को गुरु मान लिया था, फिर वह मेरी क्या श्रद्धा तोड़ेगा ? क्या

पटायेगा ? मेरे गुरु के लिए मेरी श्रद्धा तोड़े, वह मेरे दुश्मन से भी ज्यादा खतरनाक है ! दुश्मन तो दिख जायेगा लेकिन श्रद्धा तोड़नेवाला तो छुपा भयंकर दुश्मन है । कबीरा निंदक ना मिलो... चौरासी लाख जन्मों तक भटकायेगा वह तो !

मीराबाई ने कहा : 'अड़सठ तीर्थ मेरे गुरुदेव के चरणों में हैं क्योंकि गुरुजी तो प्रत्यक्ष भगवान का अनुभव करानेवाले देव हैं। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः...'

लोग बोलते हैं : 'मीरा तू तो राजरानी है और तेरे गुरु तो रविदास हैं, चमारों की बस्ती में रहते हैं।' मीराबाई बोलीं : 'अरे, जो मेरे गुरुजी की निंदा करते हैं या मेरा गुरु के साथ गलत संबंध है ऐसा जो कुछ बोलते हैं वे निंदक जल मरें चाहे अँगीठी। कोई निंदो कोई बिंदो मैं चाल चलूँगी अनूठी... मीरा के प्रभु गिरिधर नागर दुर्जन जलो जा अँगीठी।'

मीराबाई निंदकों की बात को तो ऐसे काट देती है । मीरा की श्रद्धा कोई नहीं तोड़ सका । श्रद्धा तोड़नेवालों ने मीरा की श्रद्धा तोड़ने में बहुत किया लेकिन मीरा तो अडिग रही।

मुझे भी श्रद्धा तोड़नेवाले लोग बहुत मिले। मैंने कहा : 'जा !' मेरा भाई रोके, और कितने-कितने रोकें...। भाई श्रद्धा तो नहीं तोड़ता था बेचारा लेकिन रोकता था तो मैं उसकी बात नहीं मानता। फिर माँ रोके तो उसकी बात भी नहीं मानता । मेरी माँ की बहू रोके तो उसकी बात भी नहीं मानी तो अभी वह माताजी होकर पूजी जा रही है । किसीके कहने से उसने पिक्चर देखने की बात कही लेकिन सत्संग मिल गया तो बेचारी ने पिक्चर देखने का नाम नहीं लिया और संयम व साधना की कद्र की व उस रास्ते चल पड़ी। धन्य हैं उसके माता-पिता !

दृढ़ श्रद्धा, एकाग्रता, अनासक्ति, सदाचार और ब्रह्मचर्य - ये पाँच सद्गुण रखें तो ईश्वरप्राप्ति हो जाय। और ईश्वरप्राप्ति हो गयी तो क्या बाकी रहा ! जगत की कोई भी चीज उसके लिए अप्राप्त नहीं है, आसान है।

ईश्वरप्राप्ति हो जाय तो कुछ पाना बाकी रहता है क्या ? ईश्वर को जान लिया तो और कुछ जानना बाकी रहता है क्या ? नहीं तो दुनियाभर का सब कुछ जानो और ईश्वर को नहीं जाना तो मर जाओ, कुछ भी नहीं मिला। दुनियाभर का जाना हुआ यहीं पड़ा रह गया।

दुनिया का सब ज्ञान जानते हैं और आत्मा-परमात्मा को पाकर संसार से तैरना नहीं जानते तो डूबते हैं फिर संसार में, जन्मते हैं और मरते हैं ! इसीलिए तैरना जानना हो तो 'हरि ॐ, हरि ॐ, हरि ॐ...' करके एकाग्रता और सत्संग सुनकर भगवान के प्रति दृढ़ श्रद्धा, सच्चरित्रता... संसार से तैरना सीख जाओ।

दुनिया में डूब मरना है क्या ? संसार से तरना है न ! दुःखों से पार होना है न ! चिंता, अभिमान, भय, क्रूरता से पार होना है ? जन्म-मरण के दुःखों से पार होना है ? पाप से पार होना है ?

ये सब काम हो जाते हैं, सिर्फ भगवान को पाने का इरादा पक्का करें। इसमें भक्तों और संतों के जीवन-चरित्र बड़ी सहायता करते हैं। और रोज ध्यान पक्का करें। देख लो, फिर तो पढ़ाई में भी छक्का, भगवान को पाने में भी छक्का, स्वास्थ्य में भी छक्का, आनंद में भी छक्का ! बड़ी भारी बदनामी और रेल में - जेल में भी छक्का ! हरि ॐॐॐ... आनंद ॐॐॐ... माधुर्य ॐॐॐ...

पुत्रि पबित्र किए कुल दोऊ

यह एक सत्य घटना है । एक परिवार में एक सेवानिवृत्त ईमानदार न्यायाधीश और उनकी पत्नी दोनों धार्मिक विचारों के सद्‌गृहस्थ थे । उनकी एक पुत्री थी लक्ष्मी, जिसे बी.ए. तक आधुनिक शिक्षा के साथ हिन्दू धर्म व संस्कृति की ऊँची शिक्षा तथा बचपन से ही सत्संग का माहौल मिला था ।

जज साहब अपनी बेटी के लिए संस्कारी, ईमानदार और सत्संगी वर की तलाश में थे । एक दिन रास्ते में उनकी गाड़ी के इंजन में खराबी आ गयी । चालक द्वारा बहुत प्रयास करने पर भी वह ठीक नहीं हो रहा था और कार को धक्का लगाने के लिए भी कोई तैयार न था । तभी सादे पोशाक में एक नवयुवक वहाँ आया । चालक को स्टीयरिंग पकड़ने के लिए कहकर उसने अकेले ही भारी गाड़ी को धक्का देना चालू किया और गाड़ी चालू हो गयी । जज साहब ने उस पुरुषार्थी, नेक युवक को धन्यवाद देकर उसे उसके गंतव्य स्थान तक पहुँचाने हेतु अपनी गाड़ी में बिठा लिया ।

गाड़ी में जज साहब द्वारा परिचय पूछने पर उसने बताया : ''मैं विश्वविद्यालय का एक छात्र तथा गरीब परिवार का लड़का हूँ । प्रतिवर्ष प्रथम आने के कारण मुझे छात्रवृत्ति मिलती है, जिससे मैट्रिक से एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की है । अब सरकारी छात्रवृत्ति द्वारा आगे की शिक्षा प्राप्त करने हेतु दो महीने के भीतर परदेश जाऊँगा ।''

युवक की बुद्धिशीलता और अदबभरे व्यवहार से जज साहब बहुत प्रभावित हुए । 'भले ही इसके पास पैसे की पूँजी नहीं है, मगर संस्कारों की पूँजी तो है ।' - यह सोचकर उन्होंने अपनी पुत्री लक्ष्मी का विवाह उस युवक के साथ कर दिया ।

जज साहब की इच्छा थी कि दामाद के परदेश जाने से पहले लक्ष्मी अपनी ससुराल हो आये । प्रस्ताव को सुनकर युवक बोला : ''मैं पहले गाँव जाकर घर ठीक-ठाक करा आऊँ फिर ले जाऊँगा ।'' क्योंकि लड़के का घर खंडहर था ।

युवक ने गाँव आकर अपने धनाढ्य चाचा से प्रार्थना की कि वे अपने घर को उसका बताकर लक्ष्मी को वहीं रख लें । चाचा मान गये । लक्ष्मी को ससुराल लाकर युवक ५-७ दिनों बाद परदेश चला गया । लक्ष्मी अपने मिलनसार स्वभाव के कारण २-४ दिन में ही सबकी चहेती बन गयी ।

एक दिन एक महिला ने लक्ष्मी को ताना कसा : ''क्या तुम्हारा बाप अँधा था जो बिना देखे तुझे दूसरे के घर में रहने को भेज दिया ?''

लक्ष्मी ने आश्चर्य से पूछा : ''क्या यह मेरा घर नहीं है ?''

महिला ने एक खंडहर की ओर इशारा करते हुए कहा : ''देखो, वह है तुम्हारा घर ! यह घर तो तुम्हारे पति के चाचा का है ।''

दुःखद परिस्थितियों में समता बनाये रखने की सुंदर सीख पायी हुई सत्संगी लक्ष्मी ने बिना रोये-धोये, खुशी-खुशी अपना सामान बाँधा और नौकर के हाथों उस खंडहर घर में सामान भिजवाने लगी । चाचा के समझाने पर उसने विनम्रता से कहा : ''चाचाजी ! दोनों घर अपने ही हैं । मैं इसमें भी रहूँगी, उसमें भी रहूँगी ।'' उसकी सुंदर सूझबूझ से चाचाजी बहुत प्रसन्न हुए ।

अपने घर में आकर उसने सबसे पहले अपने ससुर के चरण छुए । फिर एक आदर्श गृहलक्ष्मी की तरह सारे घर

को साफ-सुथरा करके सब कुछ एकदम व्यवस्थित कर दिया।

रात को उस पढ़ी-लिखी संस्कारी बहू ने अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए माता-पिता को पत्र लिखा : 'आज मुझे आपके द्वारा मिले भारतीय संस्कृति के संस्कारों की पूँजी बहुत काम आयी। उन्हीं संस्कारों ने आज मुझे सभी परिस्थितियों का सामना कर हर हाल में खुश रहने की कला सिखायी है।...'

माता-पिता को बेटी की समझ पर बड़ा गर्व हुआ। उन्होंने वहाँ से घर के निर्माण-कार्य के सामान व कारीगरों के साथ एक पत्र भेजा, जिसमें एक ही पंक्ति लिखी थी, 'पुत्रि पबित्र किए कुल दोऊ।' लक्ष्मी उसे पढ़कर भावविभोर हो गयी। आये हुए कारीगरों ने कुछ ही समय में एक सुंदर मकान खड़ा कर दिया। परदेश गये अपने पति को लक्ष्मी ने अभी तक कुछ बताया नहीं था।

गृह-प्रवेश के दिन लक्ष्मी के माता-पिता व पति गाँव आये। बड़ी धूमधाम से सबसे पहले युवक के पिताजी को गृह-प्रवेश कराया गया। इसके बाद सबने प्रवेश किया। इस कार्यक्रम को देखने हेतु आसपास की गरीब महिलाओं का एक झुंड अलग खड़ा था। बहू स्वयं एक-एक का हाथ पकड़कर उन्हें घर के भीतर लायी और सबको भोजन कराया। सभी आदर्श बहू पर आशीर्वादों की वृष्टि करने लगे। पति तो यह परिवर्तन देखकर अवाक्-सा रह गया। माता-पिता को भी अपनी पुत्री को देखकर आत्मसंतुष्टि हो रही थी कि सचमुच, आज सत्संग के कारण ही यह सम्भव हो पाया है।

तत्पश्चात् लक्ष्मी का पति पुनः विदेश गया और कुछ दिनों बाद अपनी शिक्षा पूरी कर स्वदेश लौट आया और पूरा परिवार एक साथ रहने लगा।

कैसी है भारत की दिव्य संस्कृति और संस्कार कि आधुनिक शिक्षा प्राप्त छात्रा ने भी विपरीत परिस्थितियों में अपना धैर्य नहीं खोया बल्कि गृहस्थ-जीवन को सुखमय जीवन में बदल दिया, संयम-सदाचार, समत्व में सराबोर कर दिया।

मन में शांति की लहरें प्रकट करनेवाली मुद्रा शांत मुद्रा

यह मुद्रा क्रोध को शांत करने में अत्यंत लाभदायी है, इसीलिए इसका नाम 'शांत मुद्रा' रखा गया है।

लाभ : (१) जिसे बार-बार क्रोध आता हो या स्वभाव चिड़चिड़ा हो, उसके लिए यह मुद्रा वरदानस्वरूप है। इस मुद्रा से क्रोध तत्काल शांत हो जाता है।

(२) क्रोध के स्पंदनों पर शांति के स्पंदनों का टकराव होने से शरीर का तान-तनाव कम हो जाता है। (३) मन भी आसानी से शांत हो जाता है। शांतिवर्धक लहरें तन-मन में संचारित होने लगती हैं।

(४) इस मुद्रा को करने पर आप विशेष एकाग्रता का अनुभव करेंगे।

विधि : (१) ध्यान के लिए अनुकूल पड़े ऐसे किसी भी आसन में बैठ जायें। आप यात्रा के समय भी किसी अनुकूल आसन में यह कर सकते हैं।

(२) उँगलियों के अग्रभागों को अँगूठे के अग्रभाग से चारों तरफ से मिलायें। अँगूठे व उँगलियों को थोड़ा-सा मोड़ें, जिससे उँगलियों के अग्रभाग अँगूठे के अग्रभाग से अच्छी तरह मिल जायें।

(३) अँगूठे के अग्रभाग पर एकाग्र हों और उँगलियों की सनसनी अनुभव करें।

मुद्रा-विज्ञान : पाँचों उँगलियाँ मिलाने पर अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी और जल ये पाँचों तत्त्व इकट्ठे हो जाते हैं। इससे प्राणशक्ति पुष्ट होती है।

मेरी क्रांतिकारी योजना

- स्वामी विवेकानंदजी

(मद्रास के विक्टोरिया हॉल में दिया गया भाषण)

(गतांक से आगे)

ईसाई मिशनरियों ने मेरे विरुद्ध ऐसे-ऐसे भयानक झूठ गढ़े, जिनकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। यद्यपि मैं उस परदेश में अकेला और मित्रहीन था तथापि उन्होंने प्रत्येक स्थान में मेरे चरित्र पर दोषारोपण किया। उन्होंने मुझे प्रत्येक मकान से बाहर निकाल देने की चेष्टा की और जो भी मेरा मित्र बनता उसे मेरा शत्रु बनाने का प्रयत्न किया। उन्होंने मुझे भूखा मार डालने की कोशिश की।

और यह कहते हुए मुझे दुःख होता है कि इस काम में मेरे एक भारतवासी भाई का भी हाथ था। वे भारत में एक सुधारक दल के नेता थे। ये सज्जन प्रतिदिन घोषित करते थे कि 'ईसा भारत में आये हैं।' तो क्या इसी प्रकार ईसा भारत में आयेंगे ? क्या इसी प्रकार भारत का सुधार होगा ? इन सज्जन को मैं बचपन से ही जानता था, ये मेरे परम मित्र भी थे। जब मैं उनसे मिला तो बड़ा ही प्रसन्न हुआ क्योंकि मैंने बहुत दिनों से अपने किसी देशभाई को नहीं देखा था। पर उन्होंने मेरे प्रति क्या व्यवहार किया !

जिस दिन 'धर्म महासभा' ने मुझे सम्मानित किया, जिस दिन शिकागो (अमेरिका) में मैं लोकप्रिय हो गया उसी दिन से उनका स्वर बदल गया और छिप-छिप के मुझे हानि पहुँचाने में उन्होंने कोई कसर नहीं रखी। मैं पूछता हूँ क्या इसी तरह ईसा भारतवर्ष में आयेंगे ? क्या २० वर्ष ईसा की उपासना कर उन्होंने यही शिक्षा पायी है ? हमारे ये बड़े-बड़े सुधारक गण कहते हैं कि 'ईसाई धर्म और ईसाई लोग भारतवर्ष को उन्नत बनायेंगे।' तो क्या वह इसी प्रकार होगा ? यदि उक्त सज्जन को इसके एक उदाहरण के रूप में लिया जाय तो निःसंदेह स्थिति कोई आशाजनक प्रतीत नहीं होती।

एक बात और। मैंने समाज-सुधारकों के मुखपत्र में पढ़ा था कि मैं शूद्र हूँ और मुझसे पूछा गया था कि 'एक शूद्र को संन्यासी होने का क्या अधिकार है ?' तो इस पर मेरा उत्तर यह है कि मैं उन महापुरुषों का वंशधर हूँ जिनके चरणकमलों पर प्रत्येक ब्राह्मण 'यमाय धर्मराजाय चित्रगुप्ताय वै नमः।' उच्चारण करते हुए पुष्पांजलि प्रदान करता है और जिनके वंशज विशुद्ध क्षत्रिय हैं। यदि अपने पुराणों पर विश्वास हो तो इन समाज-सुधारकों को जान लेना चाहिए कि मेरी जाति ने पुराने जमाने में अन्य सेवाओं के अतिरिक्त कई शताब्दियों तक आधे भारतवर्ष पर शासन किया था। यदि मेरी जाति की गणना छोड़ दी जाय तो भारत की वर्तमान सभ्यता का क्या शेष रहेगा ? अकेले बंगाल में ही मेरी जाति में सबसे बड़े दार्शनिक, सबसे बड़े कवि, सबसे बड़े इतिहासज्ञ,

दुःखनाशक अचूक औषधि भगवन्नाम

- पूज्य बापूजी

किसी दुःख-मुसीबत में फँसे हैं और भगवान का नाम लेते हैं तो जैसे डकैतों में फँसा व्यक्ति मदद के लिए चिल्लाता है, ऐसे ही भगवन्नाम एक पुकार है। और व्यक्ति को पुकारो, वह सुने - न सुने, समर्थ हो या कायर हो लेकिन भगवान सुनते हैं और समर्थ हैं। कायरता का तो 'क' भी सोचना पाप है। कोई भी तकलीफ या मुसीबत हो तो भगवान का नाम लेते-लेते हृदयपूर्वक प्रार्थना करनेवाले को बहुत मदद मिलती है। 'पुत्र चला गया भगवान के पास, अब बेटी है और चिंतित है, दुःखी है...' उस दुःख में आपको दुःखी होने की जरूरत नहीं है। दुःखहारी... जो दुःख का हरण कर ले वह 'हरि'। हरति पातकानि दुःखानि शोकानि इति श्रीहरिः। 'हे हरि... तुम्हारा नाम ही है दुःख को, पातक को, शोक को हरनेवाला और ॐकार ओज को, शांति को, सामर्थ्य को भरनेवाला है। हरि ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ...।' दुःख को याद करके आप दुःख को बढ़ाइये मत, दुःखहारी का नाम उच्चारण करके अपना और बेटी का दुःख हरिये।

जैसे कोई कुत्ता, बिल्ला या कोई पक्षी आपका भोजन जूठा करने को आ रहा है तो आप क्या करते हैं ? उनको भगाने के लिए ताली बजाते हैं। ऐसे ही चिंता, काम, क्रोध, रोग, भय, शोक ये भी आपके आत्मखजाने की थाली को जूठा करने को आयें तो आप तुरंत ताली ठोक दो, 'हरि ॐ... ॐ... बिन फेरे हम तेरे... हा... हा... हा...' हाथ ऊपर करके भगवान की शरण स्वीकार लो। 'अब हम भगवान तेरे हैं, हम चिंता, भय, क्रोध के हवाले होकर ठगे नहीं जायेंगे क्योंकि भगवान का नाम तो प्रार्थना, पुकार और भगवदीय शक्ति से सम्पन्न है।'

तो जैसे डकैतों से घिरा हुआ आदमी जंगल में पुकारता है तो कोई आये तब आये लेकिन परमात्मा तो मौजूद है। उसके नाम का बार-बार पुनरावर्तन करने से आंतरिक शक्तियाँ जगेंगी। चाहे 'नारायण-नारायण' पुकारो, चाहे 'राम-राम' पुकारो या 'हरि ॐ' पुकारो, मौज तुम्हारी है लेकिन पुकारना यह शर्त जरूरी है।

बोले, 'महाराज ! हमारे मन में खुशी नहीं है, प्यार नहीं है।' प्यार नहीं है तो कैसे भी पुकारो। खुशी और प्यार सब आ जायेगा। 'मुझे कोई खुशी दे देगा, मेरा कोई दुःख हर लेगा'- इस वादे के सौदे में मत पड़िये। शेयर बाजार में होता है वादे का सौदा लेकिन हरि का नाम वादे का धर्म नहीं, उधारा धर्म नहीं, नकद धर्म है। जैसे डायनेमो (जनरेटर) या किसी इंजन को दो-चार चक्कर चलाते हैं न, तो पाँचवें-छठे चक्कर में इंजन गति पकड़

ढूँढ़ो तो जानें

आश्रम द्वारा प्रकाशित 'जीवन विकास' तथा 'संस्कार दर्शन' पुस्तकों के आधार पर कुछ मुद्राओं के लाभ एवं चित्र नीचे दिये जा रहे हैं, वर्ग-पहेली में से उन मुद्राओं के नाम खोजिये।

(१) एकाग्रता व याददाश्त में वृद्धि होती है। मानसिक रोगों में लाभदायक।

(२) प्राणशक्ति बढ़ती है। आँखों के रोग मिटाने व चश्मे के नम्बर घटाने में सहायक।

(३) शरीर में उष्णता बढ़ती है, खाँसी मिटती है और कफ का नाश होता है।

(४) कान का दर्द व बहरापन मिटाने में सहायक।

(५) शरीर में एकत्रित अनावश्यक चर्बी और स्थूलता दूर होती है।

(६) हाथ-पैर के जोड़ों में दर्द, लकवा, हिस्टीरिया आदि रोगों में लाभदायी।

म	न	ट	म	न	ज	द	द	ल	अ	थ	त
द	श्र	उ	न	प	न	अ	प	स	श्र	त	घ
र	श	ज्ञा	श्र	स	र	स	पा	स	थ	न	ध
ग	ड़	श	फ	ल	च	इ	श्र	न	श्र	यु	उ
अ	क्ष	प	र	ग	लिं	फ	म	व	वा	ण	इ
र	प्रा	त	व	स	ध	ल	त	द	भ	यु	च
र	ह	ण	श्र	न	श	न	ख	ड़	ख	व	भ
त	क	ल	रु	उ	र्य	श्र	ड	शं	थ	ग	न
न	श्र	ज	स	सू	व	त	ज	न	श्र	प	शू
ज	स	ड़	प	न	गु	ह	स	प	ल	न्य	न
त	स	ख	श्र	ग	स	ह	ए	न	स	ए	घ
ग	त	भ	च	र	म	म	प	र	ब	प	र

(७) हृदयरोगों में तथा पेट की गैस व मेद की वृद्धि की समस्याओं में विशेष लाभदायी।

(८) आवाज की मधुरता और वाणी का प्रभाव बढ़ता है।

(९) तुतलापन, अटक-अटककर बोलना आदि में लाभदायक।

उत्तर : (१) ज्ञान (२) प्राण (३) लिंग (४) शून्य (५) सूर्य (६) वायु (७) अपानवायु (८) शंख (९) सहज शंख

****

लेता है, ऐसे ही छः बार जप करने के बाद जापक का मन और मूलाधार केन्द्र भगवदीय चेतना को पकड़ ही लेता है। जैसे डायनेमो घूमने से ऊर्जा बनती है, ऐसे ही सात बार भगवन्नाम लेने के बाद आप रक्त का परीक्षण कराइये, आपके अंदर वह ऊर्जा बन जाती है जो हताशा, निराशा, चिंताओं को हर लेती है, यहाँ तक कि हानिकारक कीटाणुओं को भी मार भगाती है।

मेटत कठिन कुअंक भाल के। भाग्य के कुअंकों को मिटाने की शक्ति है मंत्रजप में। जो संसार से गिराया, हटाया और धिक्कारा गया आदमी है, जिसका कोई सहारा नहीं है वह भी यदि भगवन्नाम का सहारा ले तो ३ महीने के अंदर अद्भुत चमत्कार होगा। जो दुत्कारनेवाले और ठुकरानेवाले थे, आपके सामने देखने की भी जिनकी इच्छा नहीं थी, वे आपसे स्नेह करेंगे। ध्यानयोग शिविर में ऐसे कई अनुभव लोग सुनाते हैं। अगर भगवन्नाम गुरु के द्वारा गुरुमंत्र के रूप में मिलता है और उसे अर्थसहित जपते हैं तो वह सारे अनर्थों की निवृत्ति और परम पद की प्राप्ति कराने में समर्थ होता है। अतः अपने मंत्र का अर्थ समझकर प्रीतिपूर्वक जप करें।

सफलता की महाकुंजी शिव-संकल्प

(अंक २५२ से आगे)

कुलीन राजकुमार जैसे काम करो

नकारात्मक विचार जैसे 'मेरा कोई नहीं है, मेरा ऐसा है... क्या करें ? फलाने को खुश रखें, कभी काम आयेगा...' तो आप बिल्कुल हीन विचार के हो, बिल्कुल छोटे विचार में गिर रहे हो । किसीका सहारा क्या ढूँढ़ना ! सारे विश्व का जो स्वामी है सर्वेश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म वह तो अपना आत्मा होकर बैठा है । एक कुलीन राजकुमार जैसे विनोद व आनंद के लिए कोई खेल खेलता है, ऐसे ही तत्परता से सेवा को, कर्म व नौकरी-धंधे को एक आनंद का साधन बना लो ।

एक महात्मा जा रहे थे । रास्ते में कोई बड़ा निर्माण-कार्य हो रहा था । कोई पत्थर का काम कर रहे थे तो कोई कुछ ।

महात्मा ने एक मजदूर से पूछा : "क्या कर रहे हो ?"

मजदूर बोला : "क्या करें बाबा ! हमारे तो भाग्य फूटे हैं । बस, अपनी किस्मत पर रो रहे हैं । क्या करें ? धूप में मजदूरी कर रहे हैं ।"

दूसरे से आगे जाकर पूछा तो बोला : "महाराज ! भगवान ने इनको प्रेरणा दी, इतना बड़ा काम हो रहा है तो हमें रोजी मिल रही है । हम रोजी कमा रहे हैं ।"

फिर दूर, दूसरी तरफ गये, तीसरे से पूछा : "क्या कर रहे हो ?"

बोला : "महाराज ! हम लोग मंदिर बना रहे हैं ।"

"तुम्हारा है ?"

"महाराज ! हमारा ही है, सब अपना ही है ।"

"तुमको क्या मिलेगा ?"

"हमको रोज के पैसे मिलेंगे ।"

"यहाँ मंदिर बनेगा ?"

"महाराज ! सबके मन में भगवान है, अल्लाह है । कोई भी आकर रहेगा तो मंदिर ही तो हो गया !"
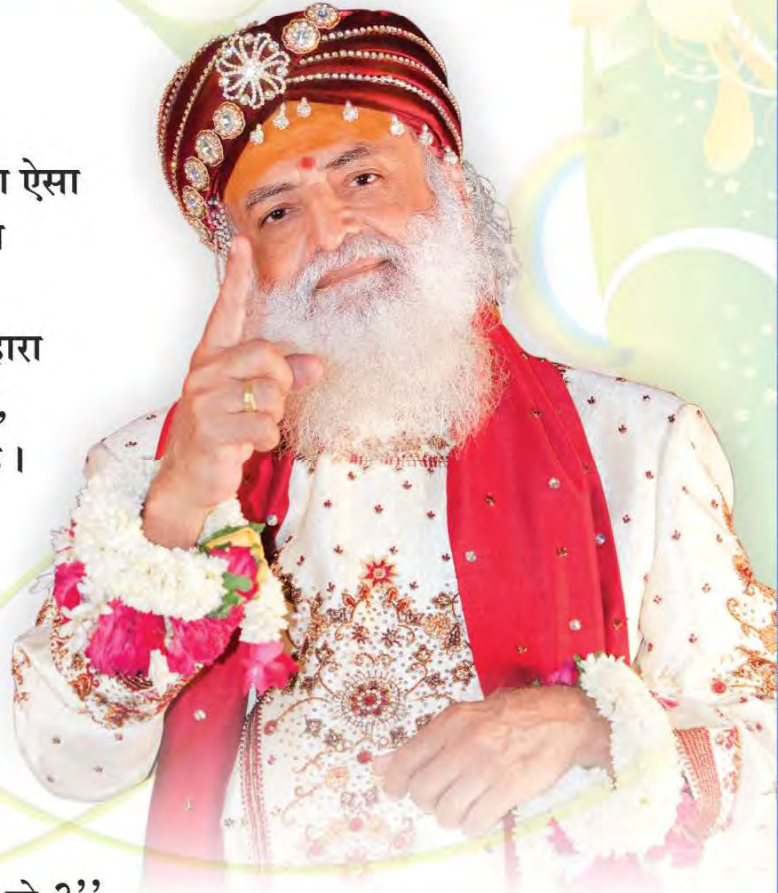
एक बोलता है, 'भाग्य कूट रहा हूँ', दूसरा बोलता है, 'रोजी कमा रहा हूँ', तीसरा बोलता है, 'मैं मंदिर बना रहा हूँ।' तो काम तो वही-का-वही लेकिन नजरिया बदल गया।

नजरें बदलीं तो नजारे बदले।
किश्ती ने बदला रुख तो किनारे बदले ॥

तो आप शिव-संकल्प करो। बोझ समझकर काम मत करो।

मम दिल मस्त सदा तुम रहना

कई ऐसे लोग हैं जिनके पास ज्यादा साधन नहीं हैं, अपना पक्का मकान नहीं है, अपनी पक्की नौकरी नहीं है, फिर भी मस्ती से जीते हैं, गाते हैं : 'फागणियो आयो रे...' और सोचते हैं, 'आज तक तो भगवान ने दिया है, तो कल भूखे रहेंगे क्या ? रहेंगे तो रहेंगे, देखा जायेगा।' और ऐसे लोग भी हैं, जिनके पास हजारों-लाखों रुपये हैं फिर भी चिंता में हैं कि 'क्या होगा ? यह हो गया, वह हो गया...।'

तो आदमी के चिंतन की धारा अशिव नहीं हो। तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। हमारा संकल्प शिव हो। मंगलकारी, सुखकारी व विधेयात्मक संकल्प हो। सुबह उठो तो परमात्म-विश्रांति पाओ और विचारो, 'हमारा सुखकारी संकल्प हो, आनंदकारी संकल्प हो।' (समाप्त)

****

(पृष्ठ २१ का शेष) सबसे बड़े पुरातत्ववेत्ता और सबसे बड़े धर्म-प्रचारक उत्पन्न हुए हैं। मेरी ही जाति ने वर्तमान समय के सबसे बड़े वैज्ञानिकों से भारतवर्ष को विभूषित किया है।

इन निंदकों को थोड़ा अपने देश के इतिहास का तो ज्ञान प्राप्त करना था। जरा यह तो जानना था कि तीनों ही वर्णों को संन्यासी होने तथा वेद के अध्ययन करने का समान अधिकार है। ये बातें मैंने यूँ ही प्रसंगवश कह दीं। यदि मैं पैरिया (चांडाल) होता तो मुझे और भी आनंद आता क्योंकि मैं उन महापुरुष का शिष्य हूँ जिन्होंने सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण होते हुए भी एक पैरिया के घर को साफ करने की सेवा की थी। मैं उन्हीं महापुरुष के श्रीचरणों को अपने मस्तक पर धारण किये हूँ। सबका सेवक बनकर ही एक हिन्दू अपने को उन्नत करने की चेष्टा करता है। उसे इसी प्रकार, न कि विदेशी प्रभाव की सहायता से सर्वसाधारण को उन्नत करना चाहिए। २० वर्ष की पश्चिमी सभ्यता मेरे मन में उस मनुष्य का दृष्टांत उपस्थित कर देती है जो विदेश में अपने मित्र को भूखा मार डालना चाहता है। क्यों ? केवल इसलिए कि उसका मित्र लोकप्रिय हो गया है और उसके विचार में वह मित्र उसके धनोपार्जन में बाधक होता है। और असल, सनातन हिन्दू धर्म के उदाहरणस्वरूप हैं ये दूसरे व्यक्ति, जिनके संबंध में मैंने अभी कहा है। इससे विदित हो जायेगा कि सच्चा हिन्दू धर्म किस प्रकार कार्य करता है। हमारे इन सुधारकों में से एक भी ऐसा जीवन गठन करके दिखायें तो सही, जो एक पैरिया की भी सेवा के लिए तत्पर हो। फिर तो मैं उसके चरणों के समीप बैठकर शिक्षा ग्रहण करूँ, पर हाँ, उसके पहले नहीं। लम्बी-चौड़ी बातों की अपेक्षा थोड़ा कुछ कर दिखाना लाख गुना अच्छा है। (क्रमशः)

गुरुदर्शन फल दुर्लभ साधो !
गुरुवर में कर हरि-दीदार।
गुरु ही भक्ति मुक्ति के दाता,
प्रभु हैं बने सद्गुरु साकार ॥

गुरु ही मात-पिता व बंधुजन,
गुरु परमेश्वर हैं जीवनधन।
अमीदृष्टि करुणा बरसाते,
सद्गुरु सुहृद हैं सर्वाधार ॥

परिप्रश्नेन...

प्रश्न : गुरुदेव ! आत्मज्ञान के पथ पर कैसे अग्रसर हों ?

पूज्य बापूजी : आत्मज्ञान प्राप्त हो । आखिरी में तो आत्मज्ञान है लेकिन उसके पहले सत्कर्म और सुमिरन है । फिर ध्यान है, सत्संग है । तो जो सत्संग, सुमिरन, ध्यान करके आत्मज्ञान की तरफ जाते हैं, उनको तो आत्मज्ञान का सच्चा रास्ता, रस मिल जाता है परंतु जो ऐसे ही सीधा आत्मज्ञान सुनकर अपने को मुक्तात्मा अथवा ब्रह्मज्ञानी मान लेते हैं, ऐसे लोगों को तो संत तुलसीदासजी ने भी डाँटा है :

ब्रह्मग्यान जान्यो नहीं और कर्म दियो छटकाय ।
तुलसी ऐसे आतमा घोर नरक में जाय ।।

ब्रह्मज्ञान तो जाना नहीं और अच्छे कर्म व सत्संग - यह सब छोड़ दिया, अपने को ब्रह्म मान लिया तो फिर भ्रम हो जायेगा । इसलिए ब्रह्मज्ञान जब तक नहीं होता तब तक आदर से भगवान का सुमिरन, जप करना, 'ईश्वर की ओर' पुस्तक पढ़ना, सत्संग में आना । इससे आत्मज्ञान का मनोरथ फलित होता है ।

विद्यार्थियों के लिए
सर्व सफलता का सरल उपाय

- पूज्य बापूजी
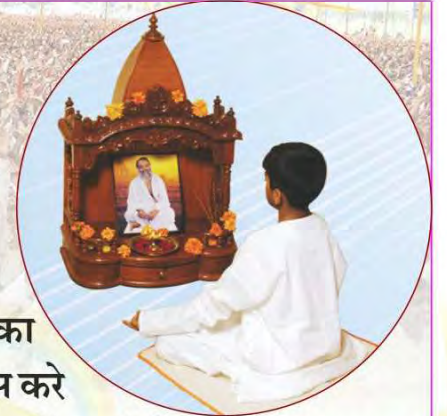
बच्चों का दिल निर्दोष होता है और निर्दोष दिल में दोषी संसार का कपट भरे उसके पहले निर्दोष नारायण का ज्ञान भरे और उसका अभ्यास करे तो बच्चे जल्दी से ईश्वर पा सकते हैं । यह बात भगवान राम के गुरुदेव वसिष्ठजी ने कही है । भगवान या गुरु के सामने देखें और ॐ का जप करें, फिर देखें और ॐ का दीर्घ व प्लुत उच्चारण करें । इससे एकाग्रता बढ़ेगी, बल, बुद्धि और ओज-तेज में भी बढ़ोतरी होगी । २०-३० मिनट दिन में दो-तीन बार करें । ४० दिन में काफी उन्नति का अनुभव होने लगेगा । पढ़ने में भी सफलता और भगवान को पाने में भी सफलता !

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा प्रेरित, महिला उत्थान मंडल द्वारा संचालित

महिला जागृति अभियान

गर्भपात एवं सिजेरियन डिलीवरी से सावधान !

गर्भपात के भयंकर दुष्परिणाम

✻ स्तन-कैंसर की सम्भावना में ३०% की वृद्धि ✻ महिलाओं में हार्मोन्स का स्तर कम होने से फिर से बच्चे होने की सम्भावना में कमी ✻ यदि संतान होती है तो उसके कमजोर और अपंग होने की सम्भावना ✻ मासिक धर्म में खराबी, कमरदर्द की शिकायत बढ़ जाती है तथा माँ की मृत्यु तक हो सकती है।

✻ सर्वाइकल कैंसर का ढाई गुना व अंडाशय (ओवेरियन) कैंसर का ५०% अधिक खतरा ✻ मनोबल में कमी, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, आत्महत्या के विचारों व मानसिक तनाव में वृद्धि

✻ गर्भपात के समय इन्फेक्शन होने पर जानलेवा पेल्विक इन्फ्लेमेटरी डिसीज की सम्भावना अधिक हो जाती है ✻ गर्भपात करानेवाली ५०% महिलाओं में फिर से गर्भपात होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

अपने-आप पर अत्याचार क्यों ?

''गर्भपात संतान के विनाश के साथ पुण्याई तो नष्ट करता ही है, साथ ही माता के स्वास्थ्य का भी विनाश करता है। अतः दवाइयों या कातिल साधनों से अपने निर्दोष शिशु के टुकड़े करवाकर (गर्भपात करवाकर) घातक बीमारियों के शिकार व महापाप का भागी बनना कहाँ तक उचित है ?''

- पूज्य बापूजी

''गर्भस्थ शिशु को अनेक जन्मों का ज्ञान होता है इसलिए श्रीमद् भागवत में उसको ऋषि (ज्ञानी) कहा गया है। गर्भपात यह कितना बड़ा पाप है ! रावण और हिरण्यकशिपु के राज्य में भी गर्भपात जैसा महापाप नहीं हुआ था ! आज यह महापाप घर-घर हो रहा है। यदि माँ ही अपनी संतान का नाश कर दे तो फिर किससे रक्षा की आशा करें ?''

- स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज

अतः सभी पवित्र आत्माओं और देश के जागरूक नागरिकों से अनुरोध है कि इस अभियान का सभी क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार करें तथा इस भयानक पाप के भागीदार न स्वयं बनें न दूसरों को बनने दें।

सिजेरियन की घातक हानियाँ

विश्वमानव के हितैषी पूज्य संत श्री आशारामजी बापू वर्षों से सत्संग में कहते आ रहे हैं कि 'ऑपरेशन द्वारा प्रसूति माँ और बच्चे - दोनों के लिए हानिकारक है। अतः प्राकृतिक प्रसूति के उपायों का अवलम्बन लेना चाहिए।'

अब विज्ञान भी कह रहा है...

सामान्य प्रसूति के समय स्रावित होनेवाले ९५% योनिगत द्रव्य हितकर जीवाणुओं से युक्त होते हैं, जो शिशु की रोगप्रतिकारक और पाचन शक्ति बढ़ाते हैं। दमा, एलर्जी, श्वसन-संबंधी रोगों का खतरा काफी कम हो जाता है।

सिजेरियन डिलीवरी से हानि

स्विजरलैंड के डॉ. केरोलिन रोदुइत द्वारा २९१७ बच्चों के अध्ययन के आधार पर...

बच्चे को होनेवाली हानियाँ

* रोगप्रतिकारक शक्ति में कमी * दमे की सम्भावना में ८०% व मधुमेह की सम्भावना में २०% की वृद्धि * अगले शिशु के मस्तिष्क व मेरुरज्जु में विकृति का खतरा, वजन में कमी।

माँ को होनेवाली हानियाँ

* माता की मृत्यु की सम्भावना में २६ गुना वृद्धि * गर्भाशय निकालने तक की नौबत * अगली गर्भावस्था में गर्भाशय फटने का डर अधिक * फिर से गर्भधारण न कर पाने की सम्भावना * ऑपरेशन की जगह पर हर्निया होने का खतरा।

'विश्व स्वास्थ्य संगठन' को हाथ लगा कड़वा सच

''बहुत-से मामलों में अस्पतालों द्वारा पैसे कमाने के लालच में ऑपरेशन द्वारा प्रसूति करवायी गयी।''

अतः प्रसूति के दर्द के भय के कारण अथवा भावी खतरों से अनजान होने से सिजेरियन को स्वीकार करनेवाली माताएँ अब सावधान हो जायें। सामान्य प्रसूति से बच्चे को जन्म दें।

सामान्य प्रसूति का रामबाण इलाज

''सामान्य प्रसूति के लिए देशी गाय के गोबर का १०-१२ ग्राम ताजा रस निकालें, गुरुमंत्र या 'नारायण नारायण...' जप करके गर्भवती महिला को पिला दें। एक घंटे में प्रसूति नहीं हो तो एक बार फिर पिला दें। सहजता से प्रसूति होगी। अगर प्रसव-पीड़ा समय पर शुरू नहीं हो रही हो तो गर्भिणी 'जम्भला... जम्भला...' मंत्र का जप करे और पीड़ा शुरू होने पर उसे गोबर का रस पिलायें तो सुखपूर्वक प्रसव होगा।'' - पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

इसके रंगीन पर्चे (पैम्फलेट) मँगवाने हेतु सम्पर्क करें :

महिला उत्थान मंडल, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद-५.

फोन : (०७९) ३९८७७७८८.

web-site: www.mum.ashram.org

e-mail: mum.prachar@gmail.com

मंगलमय समाचार

(१) स्वामी नित्यानंदजी के बारे में दिखायी गयी सेक्स सीडी फर्जी निकली। इससे संबंधित आपत्तिजनक खबरों के प्रसारण के संदर्भ में 'स्टार विजय' व 'आज तक' चैनलों को माफीनामा प्रसारित करना पड़ा।

(२) शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती एवं उनके सहयोगी न्यायालय द्वारा निर्दोष घोषित।

(३) ओड़िशा के वनवासी क्षेत्रों में धर्मांतरण रोककर सेवाकार्य करनेवाले हिन्दू संत स्वामी लक्ष्मणानंदजी की हत्या करनेवाले सात ईसाई मिशनरीवालों को उम्रकैद।

भगवान श्रीकृष्ण के ६४ दिव्य गुण

(अंक २४९ से आगे) - पूज्य बापूजी

भगवान का १७वाँ गुण है 'कृतज्ञः', भगवान कृतज्ञ हैं। थोड़ा भी भगवान का सुमिरन करो, जप करो, भगवान के लिए कुछ भी करो तो भगवान उसको भूलते नहीं, कृतज्ञ हैं। भगवान का १८वाँ गुण है 'सुदृढ़व्रतः', दृढ़व्रतधारी हैं। आपमें भी भगवान के ये गुण आयें। आप भी कोई व्रत जीवन में लाओ। माला करने का व्रत, ब्रह्मचर्य पालने का व्रत, उपवास करने का व्रत आदि कोई व्रत आपके जीवन में भीहोगा तो आप भगवान की कृपा और भगवान के स्वभाव को आत्मसात् करने में सफल हो जायेंगे। भगवान में १९वाँ गुण है 'देशकालसुपात्रज्ञः', देश, काल, पात्र और परिस्थिति को तुरंत जाननेवाले। आप भी देश, काल, पात्र और परिस्थिति को जानकर व्यवहार करो। २०वाँ गुण है 'शास्त्रचक्षुः', भगवान शास्त्रज्ञान में पारंगत हैं, उनका आचरण शास्त्रविहित होता है। आप भी सत्संग के द्वारा शास्त्र के ज्ञान में, शास्त्राचरण में पारंगत हो जाओ। २१वाँ गुण है 'शुचिः', भगवान पवित्र व पापों के नाशकर्ता हैं। आप भी मन, बुद्धि और शरीर से साफ-सुथरे रहो। २२वाँ गुण है 'वशी' अर्थात् आत्मसंयमी या जितेन्द्रिय। अपने को जब चाहें संयम में रख दें, जब चाहें तो बोलें, जब चाहें मौन रहें। ऐसा नहीं कि अपनी आदत के गुलाम बन जायें। जब चाहें अपनी आदत को घुमा दें। ऐसे आत्मसंयमी हैं भगवान। २३वाँ गुण है 'स्थिरः', भगवान स्थिर हैं अर्थात् सदा ज्यों-के-त्यों बने रहनेवाले हैं। वास्तव में तत्त्वरूप से देखा जाय तो तुम भी वही हो। यह जगत बदलता है, मन बदलता है, शरीर बदलता है फिर भी अबदल आत्मा एकरस है। और २४वाँ है 'दान्तः', भगवान में सहनशीलता है। शिशुपाल गालियाँ देता गया... १, २, ३, ४ नहीं १००-१०० गालियाँ देता गया, भगवान सहते गये। भृगु ऋषि ने लात मार दी तो भगवान उनका पैर सहलाने लगे कि ''मेरा हृदय तो देव-दानव के युद्ध में कठोर हो गया होगा। आपको चोट तो नहीं लगी ?'' कैसी सहनशक्ति ! आप भी सहनशक्ति बढ़ाओ। सासु माँ कुछ कह दे तो शांति रखो। 'हमारे पति की जन्मदात्री हैं।' सासु माँ की सेवा करो। (क्रमशः)

मंगलमय समाचार

(४) संत आशारामजी आश्रम पर लगाये गये अनर्गल आरोपों के संदर्भ में गुजरात महिला आयोग द्वारा आश्रम को क्लीन चिट।

(५) सुनील जोशी की हत्या के मामले में साध्वी प्रज्ञा सिंह को भारत सरकार की नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेन्सी द्वारा क्लीन चिट।

भारतीय मनोविज्ञान कितना यथार्थ !

(अंक २४९ से आगे)

तथाकथित मनोचिकित्सक जो विक्षिप्त फ्रायड के अँधे अनुयायी हैं, वे अल्पबुद्धि प्रायः अखबारों और पत्रिकाओं में स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी में हस्तमैथुन व स्वप्नदोष को प्राकृतिक, स्वाभाविक बताते हैं और हमारे युवावर्ग को चरित्रभ्रष्ट करने का बड़ा अपराध करते हैं, महापाप करते हैं।

डॉ. केलाग महोदय लिखते हैं : ''मेरी सम्मति में मानव-समाज को प्लेग, चेचक तथा इस प्रकार की अन्य व्याधियों एवं युद्ध से इतनी हानि नहीं पहुँचती, जितनी हस्तमैथुन तथा इस प्रकार के अन्य घृणित महापातकों से पहुँचती है । सभ्य समाज को नष्ट करनेवाला यह एक घुन है, जो अपना घातक कार्य लगातार करता रहता है और धीरे-धीरे स्वास्थ्य, सद्गुण व साहस को समूल नष्ट कर देता है।''

डॉ. क्राफट एर्विंग ने लिखा है : ''यह कली की सुंदरता एवं महक को नष्ट कर देता है जिसे पूर्ण फूल एवं पवित्र होने पर ही खिलना चाहिए परंतु ये कुंठित बुद्धिवाले इन्द्रिय-तृप्ति के लिए महान भूल करते हैं... इससे नैतिकता, स्वास्थ्य, चिंतनशक्ति, चारित्र्य एवं कल्पनाशक्ति तथा जीवन की अनुभूति नष्ट हो जाती है।''

डॉ. हिल का कथन है : ''हस्तमैथुन वह तेज कुल्हाड़ी है, जिसे अज्ञानी युवक अपने ही हाथों से अपने पैर पर मारता है । उस अज्ञानी को तब चेत होता है, जब हृदय, मस्तिष्क और मूत्राशय आदि निर्बल हो जाते हैं तथा स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, प्रमेह आदि दुष्ट रोग आ घेरते हैं।''

अतः जहाँ भी, किसी भी अखबार या पत्रिका में कोई मनोचिकित्सक या सेक्सोलोजिस्ट समाज को गुमराह करने के लिए ब्रह्मचर्य और नैतिकता के विरुद्ध लेख लिखते हों, जो समाज की आधारशिलास्वरूप चरित्र, संयम और नैतिकता को नष्ट करने का जघन्य अपराध कर रहे हों ऐसे लोगों, अखबारों तथा पत्रिकाओं का व्यापक तौर पर विरोध होना चाहिए।

बड़े-बड़े महानगरों के रेलवे स्टेशनों पर जब गाड़ी पहुँचती है तब दीवारों पर विज्ञापन लिखे हुए दिखते हैं - 'खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करें... संतानप्राप्ति के इच्छुक सम्पर्क करें... शीघ्रपतन और नपुंसकता से ग्रस्त लोग सम्पर्क करें ।' आज से पचीस साल पहले इतने यौन रोगी भारत में नहीं थे जितने आज हैं । संयम और नैतिकता का ह्रास होने के कारण कई लोग कई प्रकार के रोगी बन गये । रोगों का उपचार करने की अपेक्षा रोगों को होने न देना उत्तम है । झीर्शींशपींळेप ळी लर्शींशी िंहरप लींीश.

विश्व स्वास्थ्य संगठन (थकज) और कई राष्ट्रीय संस्थाएँ चेचक, पोलियो, टी.बी., मलेरिया, प्लेग आदि संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए करोड़ों डॉलर खर्च करती हैं, अपने लक्ष्य में कुछ हद तक वे सफल भी होती हैं परंतु इन सबसे ज्यादा हानिकर रोग है वीर्य-ह्रास । इसके द्वारा कई प्रकार के शारीरिक, मानसिक और जातीय रोगों का उद्भव होता है, सामाजिक अपराध बढ़ते हैं, अनैतिकता और चरित्रहीनता का नग्न नृत्य होने लगता है जो आगे चलकर सम्पूर्ण जाति के स्वास्थ्य को नष्ट कर डालता है । वीर्यह्रासरूपी रोग नियंत्रित करने से व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होनेवाली भारी हानि से विश्वसमुदाय बच सकता है और उपरोक्त सभी स्तरों पर ब्रह्मचर्य के अप्रतिम लाभ से सर्वांगीण उन्नति प्राप्त कर सकता (शेष पृष्ठ ३१ पर)

गर्भस्थ बालक पर संस्कारों का प्रभाव

गर्भावस्था में बालक व माता का बहुत ही प्रगाढ़ संबंध होता है। माता के पेट में बालक ९ माह गुजारता है। इस अवधि में बालक को एक अति कोमल नाल के द्वारा माता के श्वास से श्वास तथा भोजन से पोषण मिलता रहता है। इस दौरान स्वाभाविक ही माता के शारीरिक, मानसिक व नैतिक स्वरूप का प्रभाव गर्भस्थ बालक पर पड़ता है । कुछ ऐतिहासिक दृष्टांत इसके प्रमाण हैं :

अभिमन्यु ने माता के गर्भ में रहते हुए ही चक्रव्यूह में प्रवेश करने की कला पिता द्वारा सुनी । गर्भस्थ अभिमन्यु पर इस विवरण का इतना प्रभाव पड़ा कि 'महाभारत' के भीषण युद्ध में गर्भावस्था में जानी हुई विद्या का उपयोग करके वह दुर्भेद्य चक्रव्यूह में प्रवेश कर गया। इस प्रकार जन्म के बाद भी उसे चक्रव्यूह में प्रवेश करने की युक्ति याद थी।

राक्षसराज हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद महान भक्त कैसे हुआ ? गर्भावस्था में देवर्षि नारदजी ने माता कयाधू को ज्ञान-भक्ति का उपदेश दिया था। उसका प्रभाव गर्भस्थ प्रह्लाद पर पड़ा। इसलिए पिता ईश्वरद्रोही होते हुए भी पुत्र महान भक्त हुआ। हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को अनेक प्रकार के भय दिखाये व सजाएँ दीं किंतु प्रह्लाद में सत्संग के वे संस्कार इतने दृढ़ हो गये थे कि भयंकर सजाएँ भी प्रह्लाद को ईश्वरभक्ति के मार्ग से डिगा नहीं सकीं।

नेपोलियन बोनापार्ट को युद्ध की शिक्षा गर्भावस्था में मिली थी। सगर्भावस्था में उसकी माता को घुड़सवारी व युद्ध करने पड़ते थे। कई बार तो घोड़े पर ही रात्रि-विश्राम लेना पड़ता था। एक जगह से दूसरी जगह घोड़े पर ही भागते रहना पड़ता था।

१८०४ में केबोट गाँव में एक छः वर्षीय बालक में असाधारण स्मृतिशक्ति पायी गयी। वह पाँच अंकों का गुणन तुरंत मुँह-जबानी कर देता था। उसमें ऐसी विलक्षण प्रतिभा के जगने का कारण यह था कि उसकी माता को कपड़ों पर अलग-अलग आकृतियाँ बनाने के लिए ताने-बाने बड़ी सूक्ष्मता से गिनने पड़ते थे। सगर्भावस्था के दौरान एक बार एक आकृति बनाने के लिए उसकी दिन-रात की सब कोशिशें निष्फल हो गयीं । इस दौरान मस्तिष्क को असाधारण परिश्रम पड़ा । रात जगने पर भी सफलता न मिलने से वह निराश होकर काम छोड़नेवाली ही थी, तभी अचानक उसके मन में हुआ कि कुछ ताने-बाने इस प्रकार बुनें तो यह आकृति बन सकती है। उन विचारों का गहरा असर गर्भस्थ शिशु पर पड़ा और उस बालक में असाधारण क्षमता का विकास हुआ । इस प्रकार माता-पिता के आचार-विचार का असर गर्भस्थ बालक पर पड़ता ही है। अतः गर्भिणी माताएँ अधिक-से-अधिक सत्संग-श्रवण व भगवन्नाम-जप करते हुए भगवद्-चिंतन करें। (क्रमशः)

(पृष्ठ ३० भारतिय का शेष) है। अतः इस महारोग के नियंत्रण का सर्वप्रथम व्यापक प्रयास विश्व में किसीके द्वारा हुआ हो तो वह संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा चलाये जा रहे 'युवाधन सुरक्षा अभियान' एवं 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' द्वारा हुआ है। सम्पूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी इन अभियानों में स्वयं जुड़ जायें और ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को इनसे जोड़कर पुण्य के भागी बनें। मानवता की रक्षा के पुण्यमय कार्य में भागीदार बनें। 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पढ़ें-पढ़ायें। 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' में विद्यार्थियों व शिक्षकों को जोड़ें। (क्रमशः)

अहमदाबाद की पुलिस इंस्पेक्टर के खिलाफ न्यायालय में मामला दर्ज

चाँदखेड़ा, अहमदाबाद पुलिस इंस्पेक्टर एवं जाँच अधिकारी के विरुद्ध एक साधिका द्वारा गांधीनगर न्यायिक अदालत में आईपीसी की धारा १६६, ५०४, ३५४, ५०९, ५०६(१), २९५, २९८ के तहत शिकायत दर्ज करायी गयी है।

फरियाद में बताया गया है कि -

(१) जाँच अधिकारी ने बिनजरूरी सबूत इकट्ठे करने के लिए सती अनसूया महिला आश्रम की विभिन्न साधिकाओं को शारीरिक व मानसिक कष्ट पहुँचाने के बदइरादे से किसी भी प्रकार की कानूनी कार्यवाही का पालन किये बिना भयजनक वातावरण पैदा किया। इसके लिए अधिकारी ने सिविल ड्रेस में शराबी कथित पंचों को लाकर आश्रम के शांत वातावरण को अशांत कर साधिकाओं से गंदे-गलीज सवाल पूछ के उनके चरित्र पर प्रहार किया।

(२) वह जाँच अधिकारी साधिकाओं को एक तरफ ले जाकर बापूजी के विरुद्ध रेप की फरियाद करने के लिए जबरदस्ती दबाव डालती है और कहती है कि 'तुम्हें पुलिस प्रोटेक्शन दूँगी।' साधिकाओं के मना करने पर धमकियाँ देती है।

(३) वह साधिकाओं से उनके बैंक एकाउंट नम्बर तथा बैंक का नाम पूछती है और न बताने पर उन्हें धमकी देने के साथ हलके शब्दों का प्रयोग कर उनके चरित्र पर प्रहार करती है।

(४) वह साधिकाओं को ऊँची आवाज में बोलती है कि 'मैं आश्रम को बरबाद कर दूँगी। तुम्हारे बापू को किसी भी हालत में बाहर नहीं आने दूँगी, इसके लिए चाहे मुझे कुछ भी करना पड़े। तुम सीधे तरीके से आश्रम छोड़कर नहीं जाओगी तो दूसरा तरीका अपनाना पड़ेगा।' इस प्रकार की धमकियाँ देती है।

(५) वह जाँच अधिकारी सती अनसूया आश्रम में सेवा-पूजा, हवन की पवित्र जगह पर जूते पहनकर घूमती है तथा थूकती है। इस प्रकार साधिकाओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाती है।

(६) इस प्रकार के जुल्म अनेक बार होने के बाद भी फरियादी यह सोचकर घबरा रही थी कि 'पुलिस अधिकारी के विरुद्ध फरियाद करने से वह और ज्यादा परेशान करेगी, जैसे सूरत पुलिस ने निर्दोष लोगों को गुनाह में फँसाया।' ७/१२/२०१३ को सुबह १०.३० बजे वह पुलिस अधिकारी अपने साथ २५-३० लोगों को ले के महिला आश्रम में आयी, जिनमें २-३ लोग दारू पिये हुए थे और दोपहर ३ बजे तक महिला आश्रम के सभी कमरों की खोजबीन करती रही। जब वह मुख्यद्वार पर आयी और वहाँ रहनेवाली साधिकाओं ने सर्च वॉरंट माँगा तो वॉरंट दिखाने की जगह वह गालियाँ बोलकर उन्हें मारने की धमकी देने लगी और साथवालों को बोली कि 'इसको गाड़ी में बिठाकर थाने ले चलो, वहाँ पर इसे सर्च वॉरंट दिखायेंगे।' उस अधिकारी ने बिना किसी सर्च वॉरंट के इसी प्रकार की खोजबीन अगले दिन लक्ष्मी माताजी के निवास-स्थान पर भी की। शाम के ६ बजे तक खोजबीन के नाम पर लक्ष्मी माताजी की अलमारियों, पेटियों आदि का सामान जमीन पर फेंक दिया और कुछ चीजें ले लीं। फरियादी तथा दूसरी बहनों को वहाँ से जाने के लिए कहा और न जाने पर मारने की धमकी भी दी।

(७) ७ व ८ दिसम्बर को खोजबीन के दौरान वह अधिकारी क्या-क्या सामान अथवा दस्तावेज अपने साथ लेकर गयी, इसकी कोई सूची या जानकारी आश्रम को नहीं दी गयी।

इस प्रकार पुलिस अधिकारी ने वर्दी व सत्ता का दुरुपयोग करके कानून का उल्लंघन किया है।

चाय-कॉफी के घातक दुष्परिणाम

चाय-कॉफी में पाये जानेवाले केमिकल्स से होनेवाली हानियाँ :

(१) केफिन : ऊर्जा व कार्यक्षमता में कमी आती है । कैल्शियम, पोटेशियम, सोडियम, मैग्नेशियम आदि खनिजों का नुकसान होता है । कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है, हृदयाघात हो सकता है । पाचनतंत्र को हानि होती है । कब्ज और बवासीर होती है । विटामिन 'बी' को क्षति पहुँचाता है । रक्तचाप बढ़ता है । अम्लता बढ़ती है । नींद कम आती है । सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, मानसिक तनाव होते हैं । गुर्दे और यकृत खराब होते हैं । मधुमेह (डायबिटीज) बढ़ाता है । शुक्राणुओं को हानि करता है । वीर्य पतला होता है और प्रजननशक्ति कम होती है । चमड़ी को हानि करता है । गर्भस्थ शिशु के आराम में विक्षेप करता है, जो जन्म के बाद उसके विकृत व्यवहार का कारण होता है । चाय-कॉफी अधिक पीनेवाली महिलाओं की गर्भधारण की क्षमता कम होती है ।

गर्भवती स्त्री चाय पीती है तो नवजात शिशु जन्म के बाद सोता नहीं है । उत्तेजित और अशांत रहता है, हाथों और घुटनों की चमड़ी खुजलाता रहता है । कभी-कभी ऐसे शिशु जन्म के बाद ठीक तरह से श्वास नहीं ले सकते और मर जाते हैं । संधिवात, जोड़ों का दर्द, गठिया आदि होते हैं ।

(२) टेनिन : इससे अजीर्ण, कब्ज, यकृत को हानि होती है । आलस्य, प्रमाद बढ़ता है, चमड़ी को रुक्ष बनाता है ।

(३) थीन : इससे खुश्की चढ़ती है, सिर में भारीपन महसूस होता है ।

(४) सायनोजन : अनिद्रा, लकवा जैसी भयंकर बीमारियाँ पैदा करता है ।

(५) एरोमिक ऑयल : आँतों पर हानिकारक प्रभाव डालता है ।

अधिक चाय-कॉफी पीनेवालों को चक्कर आना, गले के रोग, रक्त की अशुद्धि, दाँतों के रोग और मसूड़ों की कमजोरी की तकलीफ होती है ।

***

पाचनशक्ति व स्मृति वर्धक, हृदयरोग में लाभकारी

ओजस्वी चाय

इसमें निहित विभिन्न घटक व उनके लाभ - सोंठ : कफनाशक, आमपाचक, जठराग्निवर्धक । ब्राह्मी : स्मृति, मेधाशक्ति व मनोबल वर्धक । अर्जुन : हृदयबलवर्धक, रक्त शुद्धिकर, अस्थि-पुष्टिकर । दालचीनी : जंतुनाशक, हृदय व यकृत उत्तेजक, ओजवर्धक । तेजपत्र : सुगंध व स्वाद दायक, दीपन, पाचक । शंखपुष्पी : मेध्य, तनावमुक्त करनेवाली, निद्राजनक । काली मिर्च : जठराग्निवर्धक, कफघ्न, कृमिनाशक । रक्तचंदन : दाहशामक, नेत्रों के लिए हितकर । नागरमोथ : दाहशामक, पित्तशमक, कृमिघ्न, पाचक । इलायची : त्रिदोषशामक, मुखदुर्गंधिहर, हृदय के लिए हितकर । कुलंजन : पाचक, कंठशुद्धिकर, बहुमूत्र में उपयुक्त । जायफल : स्वर व वर्ण सुधारनेवाला, रुचिकर, वृष्य । मुलेठी (यष्टिमधु) : कंठ शुद्धिकर, कफघ्न, स्वरसुधारक । (शेष पृ. ३५ पर)

सफेद शक्कर का

काला अंतरंग

रोज की शारीरिक क्रियाओं के लिए आवश्यक ४५ से ६५% शक्ति भोजन में से प्राकृतिक शर्करा (Carbohydrates) के द्वारा प्राप्त की जाती है। अनाज, फल, फलियाँ, कंदमूल, दूध आदि से इसकी आपूर्ति सहजता से होती है। प्राकृतिक शर्करा शारीरिक क्रियाओं के लिए ईंधन का कार्य करती है, अतः शरीर के लिए उपकारक है। परंतु परिष्कृत (Refined) शक्कर (चीनी) स्वयं को पचाने हेतु शारीरिक शक्ति व शरीर के आधारभूत तत्त्वों का अपव्यय करती है। शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग - हड्डी, हृदय, मस्तिष्क, अग्न्याशय, यकृत आदि की कार्यप्रणाली को अस्त-व्यस्त कर देती है। शरीर पर इसका परिणाम धीरे-धीरे असर करनेवाले विष के समान होता है।

शक्कर व अस्थिरोग

शक्कर को पचाने के लिए आवश्यक कैल्शियम हड्डियों व दाँतों में से लिया जाता है। कैल्शियम व फॉस्फोरस का संतुलन जो सामान्यतया ५:२ होता है, वह बिगड़कर हड्डियों में सच्छिद्रता (Osteoporosis) आती है। इससे हड्डियाँ दुर्बल होकर जोड़ों का दर्द, कमरदर्द, सर्वाइकल स्पॉन्डिलोसिस, दंतविकार, साधारण चोट लगने पर फ्रैक्चर, बालों का झड़ना आदि समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

शक्कर व मधुमेह

शक्कर रक्तगत शर्करा (इश्रेर्वींसिरी) को अतिशीघ्रता से बढ़ाती है। इसे सात्म्य करने के लिए अग्न्याशय की कोशिकाएँ इन्सुलिन छोड़ती हैं। इन्सुलिन की सतत बढ़ती हुई माँग की पूर्ति करने से ये कोशिकाएँ निढाल हो जाती हैं। इससे इन्सुलिन का निर्माण कम होकर मधुमेह (डायबिटीज) होता है।

शक्कर व हृदयरोग

शक्कर लाभदायी कोलेस्ट्रॉल (कऊङ) को घटाती है और हानिकारक कोलेस्ट्रॉल (LDL) तथा ट्राइग्लिसराइड्स को बढ़ाती है। इससे रक्तवाहिनियों की दीवारें मोटी होकर उच्च रक्तचाप तथा हृदयरोग (coronary artery disease and myocardial infarction) उत्पन्न होता है। लंदन के प्रो. जॉन युडकीन कहते हैं : ''हृदयरोग के लिए चीनी भी चर्बी जितनी ही जिम्मेदार है।''

शक्कर व कैंसर

शक्कर कैंसर की कोशिकाओं का परिपूर्ण आहार है। ये कोशिकाएँ अन्य आहारीय तत्त्वों (Fatty acids) का पर्याप्त उपयोग नहीं कर पातीं। इसलिए उन्हें शक्कर की आवश्यकता होती है। जिन पदार्थों से ब्लड शुगर तीव्रता से बढ़ती है, वे कैंसर कोशिकाओं की अपरिमित वृद्धि, प्रसरण व उनमें रक्तवाहिकाजनन (angiogenesis) करने में सहायता करते हैं। डॉ. थॉमस ग्रेबर ने यह सिद्ध किया है कि 'कैंसर की कोशिकाओं को आहार के रूप में शक्कर न मिलने पर वे मृत हो जाती हैं।'

शक्कर के कारण रोगप्रतिकारक प्रणाली की कार्यक्षमता घटने व अन्य आवश्यक तत्त्वों का अभाव पैदा होने

से भी कैंसर फैलने में मदद मिलती है । इससे अन्य घातक रोगों के विषाणुओं का संक्रमण होने की सम्भावनाएँ भी बढ़ जाती हैं। नशीले पदार्थों के समान अब परिष्कृत चीनी भी कैंसर का एक मुख्य कारण सिद्ध हो चुकी है।

वर्तमान में विश्व में तेजी से बढ़नेवाली मधुमेह, कैंसर व हृदय-विकार के रोगियों की संख्या देखकर सावधानी की विशेष जरूरत है।

बालकों में शक्कर के दुष्परिणाम

मीठे पदार्थों के अतिसेवन से बालकों में अधीरता, चंचलता व अशांति आती है। चीनी से उत्पन्न एसिड उनके दाँतों के संरक्षक आवरण 'इनेमल' को नष्ट करते हैं। एमोरी यूनिवर्सिटी के सर्वेक्षण के अनुसार 'जिन बालकों में ३०% से अधिक ऊर्जा का स्रोत शक्करयुक्त पदार्थ थे, उनमें हृदय की दुर्बलता, कोलेस्ट्रॉल की अधिकता, कृमिरोग, मोटापा व इन्सुलिन-प्रतिरोध पाया गया।'

शक्कर के अन्य खतरे

चीनी की अधिकता से शरीर में विटामिन बी-कॉम्प्लेक्स की कमी होने लगती है। इससे पाचन व स्नायु संबंधी रोग उत्पन्न होते हैं। चीनी रक्त की अम्लीयता को बढ़ाकर आधासीसी व त्वचाविकार उत्पन्न करती है। इससे वीर्य में पतलापन आता है। आहार में चीनी जितनी अधिक, उतना ही मोटापे का भय ज्यादा।

शक्कर इतनी खतरनाक कैसे ?

परिष्कृतिकरण की प्रक्रिया में शक्कर को सफेद व चमकदार बनाने में सल्फर-डाइऑक्साइड, फोस्फोरिक एसिड, कैल्शियम हाइड्रॉक्साइड, एक्टिवेटेड कार्बन आदि रसायनों का उपयोग किया जाता है। तत्पश्चात् इसे अतिउच्च तापमान पर गर्म करके अति ठंडी हवा में सुखाया जाता है। इस प्रक्रिया में उसके सारे पौष्टिक तत्त्व, खनिज, प्रोटीन्स, विटामिन्स आदि नष्ट हो जाते हैं। प्राकृतिक उपहार एक धीमा श्वेत विष (slow white poison) बन जाता है, जिसकी शरीर को कोई आवश्यकता नहीं होती।

अत्यधिक शक्करयुक्त पदार्थ

सॉफ्टड्रिंक्स, फलों का बाजारू रस, चॉकलेट्स, आइसक्रीम, डेसर्ट्स, जैम, पेस्ट्रीज, बिस्किट्स, मिठाइयाँ आदि में शक्कर अनर्थकारी मात्रा में पायी जाती है। कुछ चौंकानेवाले आँकड़े नीचे दिये गये हैं :

पदार्थ	राशि	शक्कर का परिमाण (लगभग)
आइसक्रीम	१२० ग्राम	२४ ग्राम (६ चम्मच)
जैम	१०० ग्राम	६० ग्राम (१५ चम्मच)
माझा	६०० मि.ली.	७८ ग्राम (२० चम्मच)
चॉकलेट	१०० ग्राम	४६ ग्राम (१२ चम्मच)
कोकाकोला	६०० मि.ली.	६६ ग्राम (१६ चम्मच)
मिठाई	१०० ग्राम	५० ग्राम (१३ चम्मच)

फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन (FAO) के सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति द्वारा २४ किलो (प्रतिदिन ६६ ग्राम) चीनी का सेवन किया जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर का पूर्ण स्वस्थ रहना असम्भव है। शुगर रिफाइनरीज के निर्माण के पूर्व कहीं भी खाद्य पदार्थों में शक्कर का उपयोग नहीं किया जाता था। प्राकृतिक शर्करा ही शक्ति का स्रोत थी। इसी कारण पुराने लोग दीर्घजीवी तथा जीवनभर कार्यक्षम बने रहते थे।

*****

(पृ.३३ ओजस्वी चाय का शेष) सौंफ : उत्तम पाचक, रुचिकर, नेत्रज्योतिवर्धक।

एक-आधा घंटा पहले अथवा रात को पानी में भिगोकर रखी हुई ओजस्वी चाय सुबह उबालें तो उसका और अधिक गुण आयेगा। (सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध)

इदं अमृतं, इदं ब्रह्म

- स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती
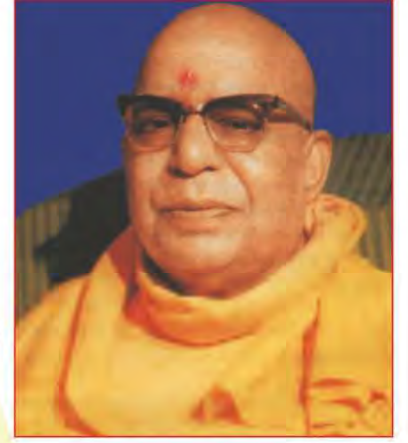
जब तक अपने को ब्रह्मरूप से नहीं जानेंगे, तब तक प्रपंच मिथ्या नहीं हो सकता । क्योंकि अनंत की दृष्टि से तो प्रपंच मिथ्या है परंतु परिच्छिन्न की दृष्टि से प्रपंच मिथ्या नहीं हो सकता है । इसलिए अपनी ब्रह्मरूपता का ज्ञान जिस क्षण होगा उसी क्षण प्रपंच सर्वथा बाधित हो जायेगा और बाधित में अहं तो कभी नहीं होगा । अतः जन्म-मृत्यु की सर्वथा निवृत्ति हो जायेगी और जिनकी दृष्टि में यह प्रपंच बाधित नहीं है, वे प्रपंच के ही किसी अंश को 'मैं' और 'मेरा' समझकर इसमें चक्कर काटते रहेंगे ।

जो इस पृथ्वी में तेजोमय, अमृतमय पुरुष है और यश्चायमध्यात्मम् यह जो अध्यात्मपुरुष है वह इदं अमृतं, इदं ब्रह्म है ।

तो देखो, जो आत्मा है वह पृथ्वी में भी वही है और शरीर में भी वही है और यह शरीर में रहनेवाला आत्मा भी तेजोमय, अमृतमय है । तो 'इदं अमृतं, इदं ब्रह्म' यह जो पृथ्वी और शरीर में आत्मा है, वही अमृत है और वही ब्रह्म है । वह एक है, अद्वितीय है । और ये जो पृथ्वी और शरीर हैं, ये न तेजोमय हैं और न अमृतमय हैं । तेजोमय नहीं हैं माने पर-प्रकाश्य हैं । माने केवल ज्ञान के विषयमात्र हैं । ये न अपने को जानते हैं और न दूसरे को जानते हैं । पुरुष जो अमृतमय है माने अविनाशी है और पृथ्वी में जो आत्मा है सो भी अविनाशी है । आत्मा, आत्मा एक है । पृथ्वी भी विनाशी है और शरीर भी विनाशी है ।

अतः शरीर और पृथ्वी विनाशी होने के कारण, विकारी होने के कारण, पर-प्रकाश्य होने के कारण, दृश्य

इंटरनेट के माध्यम से देशवासियों ने की बापूजी की रिहाई की माँग

निर्दोष बापूजी के लिए रिहाई की माँग की गूँज अब इंटरनेट पर भी छा गयी है । देशवासियों द्वारा विश्वप्रसिद्ध सोशल मीडिया वेबसाइट्स 'ट्विटर' एवं 'फेसबुक' पर खूब जोर-शोर से बापूजी की जमानत की माँग हो रही है । सोशल मीडिया के जरिये उपभोक्ता अपने समूह, मित्रों आदि तक संदेश भेजता है और उन लोगों तक भी अपनी बात पहुँचा सकता है, जो उसके समूह में नहीं हैं ।

आसाराम के शिष्यों ने किया सेवा कार्य

कोलकाता. संत श्री आसाराम बापू के शिष्यों द्वारा नौ से 16 जनवरी तक गंगासागर तीर्थयात्रियों की सेवा की गयी. इस दौरान अनेकों कार्यक्रमों के साथ साधक तीर्थयात्रियों की सेवा में जुटे रहे. 12 जनवरी को गुरुदेव को 56 भोग का प्रसाद अर्पण किया गया. साधकों ने श्री आसारामायण शांति पाठ, सुंदर कांड, हनुमान चालीसा का पाठ किया प्रतिदिन भोजन और भंडारे का आयोजन किया गया. 1 जनवरी को खीर-पूड़ी के प्रसाद के साथ समापन हुआ समिति द्वारा पिछले 17 वर्षों से यात्रियों को निःशुल्क चाय, नाश्ता, भोजन आवास की सुविधा देने के साथ ही जरूरतमंदों में कंबल वितरण किया जाता

ट्विटर पर पूज्य बापूजी के लिए बेल की माँग को दर्शाता #Bail4Bapuji एवं बापूजी की प्रेरणा से पिछले ५० वर्षों से किये जा रहे राष्ट्र-निर्माण के सेवाकार्यों को दर्शाता #KnowTheTruth ये दोनों विषय भारत में सबसे अधिक चर्चित विषयों (टॉप ट्रेंड्स) में प्रथम स्थान पर रहे । सोशल मीडिया पर यह माँग देश की जनता की आवाज को दर्शाती है; यह किसी पेड मीडिया द्वारा उनके दर्शकों एवं पाठकों पर थोपा जानेवाला झूठ नहीं है । इसके अलावा ट्विटर पर दुनियाभर के शीर्ष १० बहुचर्चित शब्दों/शीर्षकों (टॉप ट्रेंड्स) में बापूजी का नाम भी शामिल रहा ।

१४ फरवरी 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'

वेलेंटाइन डे हमारी परम्परा नहीं है

'महाभारत' धारावाहिक के भीष्म पितामह तथा 'शक्तिमान' धारावाहिक के शक्तिमान

श्री मुकेश खन्ना

बापूजी ने कहा है कि वेलेंटाइन डे के बदले मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाइये। मुझे तो शुरू से ही यह हैरानी है कि इस वेलेंटाइन डे का हमारे देश में क्या काम है ? वेलेंटाइन डे हमारी परम्परा नहीं है। हमारा नया साल गुडी पड़वा है, ३१ दिसम्बर नहीं। हमारा जन्मदिन [illegible]कर नहीं मनाया जाता, हमारा जन्मदिन अपने माता-पिता से आशीर्वाद ले के मनाया जाता है। मैं हर बच्चे को कहना चाहूँगा कि १४ फरवरी के दिन 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का अनुसरण कीजिये और धीरे-धीरे वेलेंटाइन डे को विदा कर दीजिये।

बापूजी ने हमें दिखायी सच्चे प्रेम की राह

- भागवताचार्या साध्वी सरस्वतीजी

पहले गुरु माता-पिता होते हैं और पहला प्रेम भी माता-पिता से होता है। बापूजी ने बहुत ही अच्छा संदेश दिया है कि अगर प्रेम करना ही है तो माता-पिता से करो। वास्तव में 'वेलेंटाइन डे' जो अब 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है, यह सच्चे प्रेम की राह बापूजी ने दिखायी है। इसीलिए बापूजी को फँसाया जा रहा है। साजिश करनेवाले ईसाई मिशनरी हैं। वे साजिश इसलिए कर रहे हैं क्योंकि जब तक संत नहीं मिटेंगे, तब तक वे अपना धर्मांतरण का कार्य नहीं कर पायेंगे। संतों के खिलाफ बहुत बड़ी साजिश चल रही है लेकिन बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू समाज जागृत भी हो रहा है।

संत सबका उद्धार करने आये हैं

- तमन्ना परवीन कमाल, झारखंड

मैं मुस्लिम परिवार से हूँ। मैंने एम.बी.ए. किया है व मुझे डेप्युटी मैनेजर के पद पर ३०,००० रुपये वेतन भी मिल रहा था। लेकिन मुझे जिस सुख-शांति की तलाश थी, वह मुझे धन-सम्पदा, पद-प्रतिष्ठा में न मिली। मैं पीरों-फकीरों के पास भी जाती थी लेकिन मुझे वहाँ भी वह सुख-शांति नहीं मिली।

२००७ में किसी साधक ने एक तस्वीर दिखायी और कहा, 'इनका नाम आशारामजी बापू है। इनके सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज हैं...' फिर मैंने बापूजी की जीवनी पढ़ी, आश्रम की काफी पुस्तकें पढ़ीं। मुझे लगा कि ये फकीर कोई जाति विशेष के लिए नहीं हैं, इनसे हम भी फायदा उठा सकते हैं। एक बड़ा फायदा तो मुझे सिर्फ बापूजी की तस्वीर का दीदार करने से ही हो गया कि मुझे मांस आदि व्यसनों से अरुचि हो गयी। फिर तो मैंने बापूजी से मंत्रदीक्षा ले ली, जिसके बाद मुझे कई अनुभव हुए जिन्हें लफ्जों से बयान नहीं किया जा सकता।

आज बापूजी पर जो भी लांछन लगाये जा रहे हैं, वे सब बेबुनियाद और झूठे हैं। मीडिया एकतरफा तस्वीर दिखा रहा है। पहले भी मीडिया ने कई संतों-फकीरों को दोषी करार देने की पूरी चेष्टाएँ कीं लेकिन शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती ९ वर्ष में, स्वामी केशवानंदजी ७ वर्ष में और स्वामी नित्यानंदजी ३ वर्ष में निर्दोष साबित हुए। जब संत निर्दोष साबित होते हैं तो वह क्यों नहीं दिखाता मीडिया ? मैंने खुद बापूजी के सत्संग-भंडारे में सेवा की है। इससे कितने लोगों का जीवन खुशहाल हुआ है ! यह सब मीडिया क्यों नहीं दिखाता ?

बापूजी तो हमें झोली भर-भर के दे रहे हैं लेकिन कुछ लोग निंदा करके अपने पापों का घड़ा भर रहे हैं। बापूजी जैसे सच्चे फकीर के लिए मेरे जैसे करोड़ों लोगों के दिल में जो आस्था है, उसे मिटाने का वे चाहे कितना भी प्रयास कर लें पर वे सफल नहीं हो पायेंगे क्योंकि बापूजी के सत्संग-दर्शन से जिस इलाही सुख-चैन-अमन का हमने रू-बरू एहसास किया है, उसके सामने मीडिया की बेबुनियाद उगलन की कोई कीमत नहीं है।

प्रार्थना कर जोड़ के, लीला अपनी छोड़ के।
आओ ना गुरुदेव...
सब अधीर हैं हो रहे, सारे साधक रो रहे।।
आओ ना गुरुदेव...
आपके दर्शन बिना,
कुछ भी न अब भाता हमें।
याद कर-कर आपकी,
मन बहुत तड़पाता हमें।
कष्ट इतना ना सहो, दूर हमसे ना रहो।।
आओ ना गुरुदेव...
हे प्रभु जो बन पड़ा,
वह सभी तो हमने किया।
पर सफलता ना मिली,
है जल रहा सबका हिया।
आप ही कुछ कीजिये, शीघ्र दर्शन दीजिये।।
आओ ना गुरुदेव...

क्या करें हम सभी अब
कुछ भी समझ ना आ रहा।
अभी तक का हर प्रयास
विफल ही होता जा रहा।
विपति यह भारी हरो, प्रेरणा कुछ तो करो।।
आओ ना गुरुदेव...
हैं सहारा हम सभीके, आप तारणहार हैं।
पा के सम्बल आपका, हम हो रहे भवपार हैं।
व्यासपीठ निहारते, आपको हैं पुकारते।।
आओ ना गुरुदेव...
सूना आश्रम आप बिन,
है सभी व्याकुल हो रहे।
आपके सान्निध्य बिन,
सब धैर्य अपना खो रहे।
कर कृपा अब आओ ना,
विपति दूर भगाओ ना।।
आओ ना गुरुदेव... प्रार्थना कर जोड़ के...

कुप्रचार की आँधी में भी जगमगा रहे हैं निष्काम सेवा के दीप
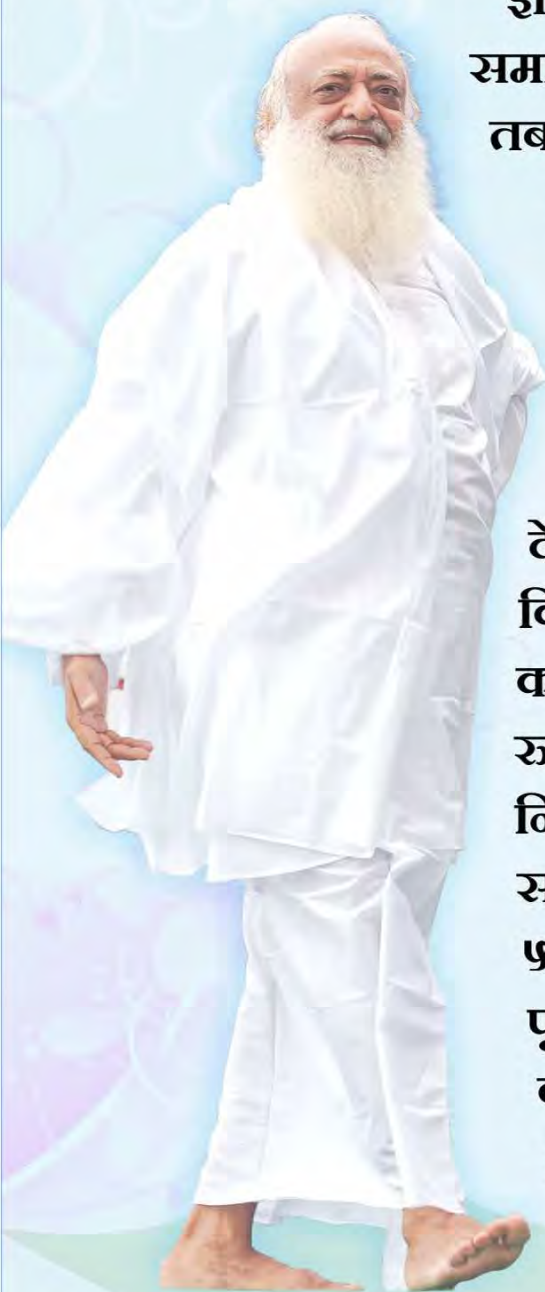
इतिहास साक्षी है कि जब-जब किन्हीं महापुरुष ने समाज को मोहनिशा से जगाने का कार्य किया है, तब-तब आसुरी प्रकृति के लोगों ने उनका विरोध किया है। पूज्य बापूजी द्वारा गरीबों-आदिवासियों हेतु उत्थान कार्यक्रम, स्वदेशी सामग्रियों को बढ़ावा एवं संस्कृति-रक्षा हेतु व्यापक स्तर पर कार्य किये जाने तथा बापूजी के देशभर में निरंतर होते सत्संग-कार्यक्रमों द्वारा करोड़ों देशवासियों की सर्वांगीण उन्नति होने से राष्ट्र-विखंडन चाहनेवाली ताकतों, विधर्मियों, विदेशी कम्पनियों को उनके लक्ष्य को पूरा करने में काफी रुकावट आ रही थी। यही कारण है कि वे राष्ट्र-निर्माण के सेवाकार्यों को बंद करने के लिए लम्बे समय से अलग-अलग षड्यंत्र रचते आये हैं। पिछले ५ महीनों से साजिशकर्ताओं और बिकाऊ मीडिया ने पूज्य बापूजी व आश्रमों के ऊपर कीचड़ उछालने में कोई कसर नहीं छोड़ी है लेकिन फिर भी वे बापूजी द्वारा चलाये जा रहे इन दैवी कार्यों को कोई हानि नहीं पहुँचा पाये हैं और अभी भी प्रतिवर्ष की भाँति सभी सेवाकार्य सुचारु रूप से चल रहे हैं।

भजन करो, भोजन करो, दक्षिणा पाओ, साथ में खजूर ले जाओ

पिछले अनेक वर्षों से बापूजी की सत्प्रेरणा से देश के विभिन्न स्थानों में 'भजन करो, भोजन करो, दक्षिणा पाओ' कार्यक्रम के अंतर्गत भगवन्नाम जपयज्ञ का आयोजन किया जाता रहा है । इनमें गरीबों, बेरोजगारों, असहाय वृद्धों, विकलांगों आदि को भगवन्नाम-जप, कीर्तन व सत्संग का लाभ, दोपहर को भरपेट भोजन व शाम को ४०-५० रुपये नकद दक्षिणा दी जाती है। गरीब लोगों की सेहत भी बढ़िया हो इसलिए बापूजी सर्दियों में खजूर भी बँटवाते रहे हैं। गत माह पूज्य बापूजी के निर्देशानुसार निम्नलिखित स्थानों पर लोगों को भोजन व दक्षिणा के साथ १-१ किलो खजूर भी दी गयी।

राजस्थान में निवाई गौशाला, कोटा गौशाला, आमेट जि. राजसमंद, मध्य प्रदेश में मझगुवाँ व गोरा खुर्द जि. सागर, भोपाल आश्रम, खजरी आश्रम (छिंदवाड़ा), महिला आश्रम (छिंदवाड़ा), वरला व धवली जि. बड़वानी, महाराष्ट्र में दोंडाईचा जि. धुलिया, मालेगाँव जि. नासिक, प्रकाशा जि. नंदूरबार, सोलापुर, उपलाई जि. सोलापुर, ढोराला जि. उस्मानाबाद, ओड़िशा में लड्डूगाँव जि. कालाहाण्डी, श्रीपाली भाटेल जि. कालाहाण्डी, कंधकेलगाँव जि. बालंगीर, नरेन्द्रकोण व बलियापंडा (जगन्नाथपुरी), अम्बाजी (गुज.), सिरसिला जि. करीमनगर (आंध्र प्रदेश), कोलकाता (पश्चिम बंगाल) आदि स्थानों पर उपरोक्त सेवाकार्य हुए।

कम्बल वितरण तथा भंडारा सेवा

सर्दियों की कड़कड़ाती ठंड में गरीब-आदिवासी क्षेत्रों में लोगों को राहत पहुँचाने के लिए पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से हर वर्ष सर्दियों में कम्बल वितरण अभियान चलाया जाता रहा है । इस वर्ष भी रतननगर (राज.), ग्वालियर (म.प्र.), दिल्ली, बाँदा (उ.प्र.) सहित कई स्थानों पर गरीबों में कम्बल वितरण किया गया । आं.प्र. के आर्तुलागाँव जि. रंगारेड्डी तथा कोलकाता में कम्बल व अनाज वितरण के साथ भंडारे का भी आयोजन हुआ । उत्तरायण के पावन पर्व पर दिल्ली में जंतर-मंतर एवं सीलमपुर आश्रम में भंडारों के आयोजन के साथ कम्बल, करमंडल, दाल, चावल, लावा आदि सामग्रियाँ बाँटी गयीं। इसके अलावा देश के विभिन्न स्थानों पर आश्रम द्वारा तिल के लड्डू व खिचड़ी का वितरण किया गया।

गंगासागर तीर्थयात्री सेवा शिविर

कोलकाता के गंगासागर में तीर्थयात्रियों के लिए पिछले १७ वर्षों से चलायी जा रही इस सेवा के अंतर्गत इस वर्ष भी ९ से १६ जनवरी तक विशेष सेवा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें निःशुल्क नाश्ता, भोजन, होमियोपैथिक चिकित्सा, आवास व्यवस्था आदि सेवाओं द्वारा तीर्थयात्री लाभान्वित हुए। जरूरतमंदों को कम्बल भी भेंटस्वरूप दिये गये।

देशभर में निकाली जा रहीं संकीर्तन यात्राएँ एवं हो रहे हवन-यज्ञ

दिल्ली के युवा सेवा संघ द्वारा विवेकानंद जयंती पर संत महासभा के अध्यक्ष श्री चक्रपाणिजी, साध्वी तरुणा बहन व रामा भाई के सान्निध्य में विशाल संकीर्तन यात्रा निकाली गयी। रायबरेली (उ.प्र.), लुधियाना, रायपुर, बिरगाँव सहित देश के कई स्थानों पर भव्य संकीर्तन यात्राएँ व प्रभातफेरियाँ निकाली गयीं। पटना में विशाल बाइक रैली निकाली गयी। इन यात्राओं में साधकों ने कुप्रचार का खुलासा करनेवाले अखबार, पर्चों, 'सच्चाई' तथा 'सच' पुस्तक, 'ऋषि प्रसाद' व 'लोक कल्याण सेतु' पत्र-पत्रिका आदि का वितरण किया। रायपुर में हर रविवार को अलग-अलग क्षेत्रों में निकलनेवाली संकीर्तन यात्रा के अंत में सामूहिक रूप से मातृ-पितृ पूजन किया जाता है। पूज्य बापूजी व श्री नारायण साँईंजी शीघ्र बाहर आयें व षड्यंत्रकारियों की साजिश विफल हो इस हेतु देशभर में हवन व अनुष्ठान निरंतर जारी हैं। अहमदाबाद आश्रम में १२, १९, २६ जनवरी व २ फरवरी को एवं नागपुर (महा.) में २ फरवरी को १०८ कुंडी महायज्ञ तथा जोधपुर आश्रम में १८ जनवरी को, बड़ौदा आश्रम में २६ जनवरी को एवं राजकोट आश्रम (गुज.) में २ फरवरी को २१ कुंडी महायज्ञ का आयोजन हुआ।

सुप्रचार से खुल रही कुप्रचारकों की पोल

पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईंजी एवं आश्रम के खिलाफ रची गयीं साजिशें, साधकों के हृदय में बापूजी के लिए जो प्रेम व श्रद्धा है, उसे तनिक भी कम नहीं कर पायी हैं। इसका साक्षात् प्रमाण है साधकों की सुप्रचार सेवा में अधिकाधिक तत्परता व निष्ठा। इसके परिणामस्वरूप इतने दुष्प्रचार के बावजूद भी आज समाज सत्य को समझ रहा है। साधकों द्वारा चलाया जा रहा सुप्रचार अभियान निरंतर जारी है। सोशल मीडिया वेबसाइट्स पर भी समाज के पढ़े-लिखे एवं बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा पूज्य बापूजी की रिहाई की माँग सतत की जा रही है।

संत-सम्मेलनों द्वारा हुई जन-जागृति

१४ जनवरी को अहमदाबाद, १५ जनवरी को जोधपुर (राज.), १९ जनवरी को भर्रेगाँव जि. राजनांदगाँव (छ.ग.) आदि स्थानों पर विशाल संत-सम्मेलन सम्पन्न हुए। इससे झूठे कुप्रचार की पोल खुल गयी है और षड्यंत्र के खिलाफ समाज में जागृति व एकजुटता आ रही है।

उत्तरायण पर हुआ त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी उत्तरायण पर्व के निमित्त अहमदाबाद आश्रम में त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के पहले दिन १२ जनवरी को आयोजित हुए १०८ कुंडी महायज्ञ में हजारों लोगों ने हवन किया। दूसरे दिन साधकों ने साध्वी रेखा बहन के सत्संग का लाभ लिया एवं १४ जनवरी को उत्तरायण के दिन आश्रम में संत-सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें देशभर से आये कई संतों एवं गणमान्य लोगों ने भाग लिया। इस दिन साधकों को स्नान के समय तिलमिश्रित उबटन और भोजन में भी तिल का प्रसाद दिया गया।

मातृ-पितृ पूजन दिवस

सभी धर्मों के हित की भावना से ओतप्रोत पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से विश्वमांगल्य हेतु पिछले ८ वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाये जा रहे 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के कार्यक्रमों की शुरुआत हो गयी है। कोटा-रायपुर (छ.ग.) तथा नोयडा (उ.प्र.) में विशाल सामूहिक मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

अन्यायपूर्वक तोड़ा गया जबलपुर आश्रम का निर्माणकार्य

संत श्री आशारामजी आश्रम, जबलपुर का निर्माणकार्य आश्रम की खुद की खरीदी हुई जमीन पर किया गया था और १० वर्षों से भी ज्यादा पुराना था । यह क्षेत्र जबलपुर मास्टर प्लान में आवासीय क्षेत्र घोषित किया गया है। ऐसे क्षेत्रों में यदि कोई पूर्व अनुमति बिना का निर्माणकार्य पाया जाता है तो कंपाउंडिंग शुल्क (शमन शुल्क) लेकर उसे नियमित किया जा सकता है । आश्रम-प्रबंधन कंपाउंडिंग के लिए तैयार भी था । इस संबंध में माननीय उच्च न्यायालय में आश्रम-प्रबंधन की अपील पेंडिंग थी, उसकी सुनवाई उसी दिन होनी थी। लेकिन प्रशासन द्वारा उस निर्णय की जरा भी प्रतीक्षा न करते हुए निर्माणकार्य सीधा तोड़ने में जल्दबाजी दिखायी गयी । यह सरासर अन्याय है, कानून की अवहेलना है।

जानकारी के अनुसार उस क्षेत्र के अधिकांश निर्माणकार्य बिना पूर्व मंजूरी के किये गये हैं । तो जितनी तत्परता से सत्प्रवृत्तियों में लगे हुए आश्रम के निर्माणकार्य को तोड़ा गया, उतनी ही तत्परता से प्रशासन अन्य निर्माणों को तोड़ने के लिए कदम क्यों नहीं उठाती ? दूसरी बात, एक तरफ जब यह मामला माननीय उच्च न्यायालय में विचाराधीन है तो न्यायालय का निर्णय आने के पहले ही जनहित में कार्यरत एक आश्रम, जिसका लाभ आसपास की जनता ले रही थी, का निर्माणकार्य तोड़कर प्रशासन ने जनता का कौन-सा हित किया है ? और निर्माणकार्य टूट जाने के बाद उच्च न्यायालय की कार्यवाही का औचित्य ही क्या रहा ?

आश्रम ट्रस्ट एक पंजीकृत धमार्थ ट्रस्ट है तथा यह पूर्त आयुक्त (चैरिटी कमिश्नर)/जिलाधिकारी के अधीन होता है । फिर ऐसी धार्मिक संस्था का निर्माणकार्य यदि प्रशासन नियमानुसार नियमित करता तो राजकीय कोश में आय बढ़ती परंतु द्वेषवत् इसे तोड़कर प्रशासन ने तो खुद की राजकीय सम्पत्ति एवं आमदनी का भी नुकसान किया । यह जनहित में कतई नहीं है।

विभिन्न संतों, संगठनों के प्रमुखों, प्रतिष्ठितों एवं हजारों धर्मप्रेमी लोगों ने संस्कृति एवं संतों पर हो रहे अन्याय का विरोध करते हुए निर्दोष पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईं की रिहाई की माँग की।

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2014

अहमदाबाद

जोधपुर (राज.)

जोधपुर में संत-सम्मेलन के दौरान बापूजी की याद में रोता हुआ जनसमुदाय

हमने पिता से निभाया, माँ से निभाया, गुरु से निभाया और शिष्यों से भी हम निभा लेते हैं तो फिर कुप्रचारवाले क्या करेंगे ! शिष्य भी मेरे से निभा रहे हैं। कोई कुछ निंदा की बात सुनाता है तो मेरे साधक बोलते हैं कि 'तू क्या जाने ? तू क्या जाने गुरुजी को ?...' – पूज्य बापूजी

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 18th & 19th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.